नं० ५४४३ — घ

नवरत्नमाला ज्योतिषम्

पत्राणि ४३

संपूर्णम्

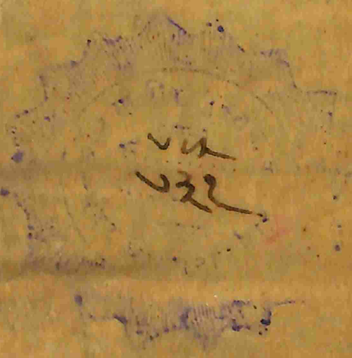
नवरत्न



नं० ५४४३-घ
नवरत्नमाला (ज्योतिषम्)
पत्राणि ४३ (संपूर्णम्)

नं ७३१ क
नवरत्नमाला
४३ पत्राणि।
ज्योतिष

5443
43
पूर्ण



ॐ

प्रणम्य गणाध्यक्षं शारदां हरिशंकरौ
नवरत्नचिंतामालां वक्ष्ये लोकहिताय वै १

न॰
र॰
१

[१] यत्पादपद्मयुगलं
त्रिदशैर्दिविस्थैर्ध्यातं
तुयेनरचितंजगदा
दिभूतम् तद्विस्तुकलि
नमथोघहितं षडङ्गैर्वे
दैस्तु तत्रय नभूतमनस्त्र
कार १ यज्योतिषंद्वि
विधमस्ति च प्रश्नजालं
चैकं च जातकदलं स्वप
रं समग्रम् तत्केरलाख्य
मभवन्नवरत्नमाला
ग्रंथस्तु नामकमशेष
जनोपकारम् २

ॐ श्रीगणेशायनमः श्रीरघुनाथोज
यति [१] स्वर्गलोकनिवासी लेखीकोदिदे॰
वनाकरकेवेदिनवरणश्रगलजिन॰
के पेसे जो महाविज्ञहैं उन्होंनेकहैजो
वेदके छे अंगहैं उनमें नेत्ररूप जो
ज्योतिष अंगहै [१] उसमें जातक और प्र॰
श्नके जो जो भेद लिखेहैं वेह संपूर्ण
इसनवरत्नमालानामक केरलग्रंथमें
हैं [२] ॥ इससेहेतुसे श्रीमन्महाराजाधिरा॰
ज जम्बूकाश्मीरतिब्बताद्यनेकदेशा॰
धिपति प्रभुवर परमकारुणिक महा
राजासाहिबबहादुर श्री १०८ रणवी॰
रसिंहजीकी आज्ञासे सकललोकोंके
उपकारवाले केवलशास्त्रसे विश्वेश्व
रजोतसीनेबनाया इसमें जो प्रश्न॰
आदि लिखेहैं उनके बकभिमाथही॰

लिखेहैं इसग्रंथमें आहफलग्न ओरल
ग्नसे फलका विचारकियाजाताहै॥३ ओर
इसग्रंथमे नवग्रहरूपीरत्न नौसर्गोंके
बीचमें ओनकियेहैं इसवास्ते इसका ।
नाम नवरत्नमालाहै॥४ सर्गोंकेनाम
सर्वप्रश्नमेंग्रहसर्ग १ शुभाशुभफल स
र्ग २ जयपराजयसर्ग ३ नष्टलाभ ४
मारकज्ञान ५ महाराजयोग ६ कु
योग ७ मेयाल ८ मिश्रितफल ९
ज्ञातकओरप्रश्नग्रंथोंमेंजोफलहै सो
संपूर्णइन नौसर्गोंमें संग्रहकियाहै ॥१०
अबआहलराशिज्ञानकेवास्तेआइड
चक्रलिखतेहैं एकगोलकेबीच मे
द्वादशराशि पूर्वदिशाके क्रम

न॰ में दिशामें दोदोराशि ॥११॥ और कोणमें ।
र॰ एक एक दिस्वभावराशिस्थितहै ॥१२॥ जैसा
२ मेष वृष पूर्व मिथुन अग्नीकोण कर्क
सिंह दक्षिण कंन्या नैऋतकोण तुल
वृश्चिक पश्चिम धन वायुकोण मक
र कुंभ उत्तर मीन ईशानकोणमेंस्थि
तहै ॥१३॥ इसका चक्रदेखो



अथ प्रहर ग्रह कहते हैं सूर्य मंगल
बृहस्पति बुध शुक्र शनि चंद्रमा
राहु पहर पहर ग्रह हैं ॥१४॥ पूर्वक्रमसे वै
शाखादि महीनोंमें प्रातःकालसे ले
कर पांच पांच घटी मेषादिराशियों
में भोगते हैं ॥१५॥ जैसा वैशाखमासविषे
सूर्यमेषमें मंगलवृषमें बृहस्पतिमि
थुनमें बुधकर्कमें ॥१६॥ शुक्रसिंहमें श-
निकन्यामें चंद्रमातुलविषे राहुवृ-
श्चिकमें ॥१७॥ सूर्यधनमें मंगलमकरमें
गुरुकुंभमें बुधमीनविषे ॥१८॥ इसीक्रमसे
ज्येष्ठादिमासोंमें भी मासादिकोंका उद-
यजाननाचाहिये ॥१९॥ पहरएकएकराशि
मेंपांचपांचघटीभोगतेहैं दिनरात्रि

१॰ मैं यह ग्रंथ चक्र देखने में स्पष्ट मलू॰
२॰ महीना देखो चक्र में २० ॥ आरूढग्रहचक्रं
२१
३॰

| घरी | वैशाख | ज्येष्ठ | आषाढ | श्रावण | भाद्रपद | आश्विन | कार्तिक | मार्ग | पौष | माघ | फाल्गुन | चैत्र | घरी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | मेष सूर्य | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | ५ |
| १० | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | १० |
| १५ | मिथुन बु | कर्कट गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | १५ |
| २० | कर्कट गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | २० |
| २५ | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | २५ |
| ३० | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | ३० |
| ३५ | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | ३५ |
| ४० | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | ४० |
| ४५ | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | ४५ |
| ५० | मकर भौ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | ५० |
| ५५ | कुंभ बु | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | ५५ |
| ६० | मीन गु | मेष सू | वृष भौ | मिथुन बु | कर्क गु | सिंह शु | कन्या श | तुल चं | वृश्चि रा | धन सू | मकर भौ | कुंभ बु | ६० |

इसीतरहसेनात्कालिकग्रहजाननेचा
हिये अवऔरप्रकारसेआठग्रह,
कहतेहैं सूर्य चंद्र भोम गुरु बुध राहु
शुक्र केतु शनि चंद्र राहु केतु य
ह वृषादिद्वादशराशीन्केस्वामीहैं जो
शादिमासोंमे सूर्य.।ऐक एकवारयह ॥२२
प्रातःकालसे लेकर ढाई ढाई घटी
वृषादिराशियोंमे उदयहोतेहैं औरउ
न्हेराशीमे एकस्थितभीहोतेहैं जैसा
जोवृषमासमें प्रातःकालसे ढाई घटी
तक सूर्यवृषमें और वृषलग्नकाउद
यभीहोताहै ॥२२ ऐसेआषाढमें प्रातःका
लविषे मिथुनलग्न औरमिथुनविषे
चंद्रमाभीहै आगेक्रमसेजाननाचाहि

नं. २. ४

ये इमीनगाक्रमशूर्लक मेशूणेमासोंमे जानो '२४ आमूठग्रहचक्रम ॥

| वृष | मि | क | सिं | कं | तुं | वृं | धं | मं | कुं | मी | मे | घटी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज्येष्ठ | आषाढ | श्रावण | भाद्रो | आश्विन | कार्तिक | मार्ग | पोष | माघ | फाल्गुन | चैत्र | वैशाख | ॥ | |
| सू बु | भौ श | बृ चं | शु रा | के चं | रा चं | बु सू | श भौ | चं बृ | रा शु | रा के | चं के | २॥ | वृ |
| भौ श | बृ चं | शु रा | के चं | रा चं | बु सू | श भौ | चं बृ | रा शु | रा के | चं के | सू बु | ५ | मि |
| बृ चं | शु रा | के चं | रा चं | बु सू | श भौ | चं बृ | रा शु | रा के | चं के | सू बु | भौ श | ७॥ | कं |
| शु रा | के चं | रा चं | बु सू | श भौ | चं बृ | रा शु | रा के | चं के | सू बु | भौ श | बृ चं | १० | सिं |
| के चं | रा चं | बु सू | श भौ | चं शु | रा [illegible] | रा के | चं के | सू बु | भौ श | बृ चं | शु रा | १२॥ | कं |
| रा चं | बु सू | श मं | चं शु | रा शु | रा के | चं के | सू बु | मं श | बृ चं | शु रा | के रा | १५ | तुं |
| बु सू | श मं | चं शु | रा शु | रा के | चं के | सू बु | मं श | बृ चं | शु रा | के रा | रा चं | १७॥ | वृं |
| श मं | चं शु | रा शु | रा के | चं के | सू बु | मं श | बृ चं | शु रा | के रा | रा चं | बु सू | २० | धं |
| चं बृ | रा शु | रा के | चं के | सू बु | मं श | बृ चं | शु रा | के रा | रा चं | बु सू | श मं | २२॥ | मं |
| रा शु | रा के | चं के | सू बु | मं श | बृ चं | शु रा | के रा | रा चं | बु सू | श म | चं बृ | २५ | कुं |
| रा के | चं के | सू बु | मं श | बृ चं | शु रा | के रा | रा चं | बु सू | श म | चं बृ | रा शु | २७॥ | मी |
| चं के | सू बु | मं श | बृ चं | शु रा | के रा | रा चं | बु सू | श मं | चं बृ | रा शु | रा के | ३० | मे |

इसचक्रविचयेग्रहलिखेहैं येग्रहग्राह
कग्रहहैं इनकाक्रमयहहै कि सूर्य
केआगे शुक्रहै १ भौमके शनि २ बृ
हस्पतिके चंद्रमा ३ बुधके राहु ४
केतुकेआगे राहुः ५ राहुके चन्द्रमा
६ शुक्रके सूर्य ७ शनिके मंगल ८
चन्द्रमाके बृहस्पति ९ राहुकेआगे
बुध १० राहुकेआगेकेतुः ११
चंद्रमाकेआगेकेतु १२ एग्रहग्राहक
ह ग्राहकलग्नकेपूर्वार्धमें प्रथमग्रह
उत्तरार्धमें दूसराग्रहजाननाचाहिये
जैसा ज्येष्ठमासके प्रातःकालमें छ
ई घटीतक वृष ग्राहकलग्नहै उस
केपूर्वार्धकासूर्यस्वामीहै उत्तरार्धका

नं. २. ५

शुक्रस्वामीहै आरूढलग्नका शुक्रभो
ग्य लग्नके शुक्रभोग्यमे जानना चाहि
ये जो तत्काललग्नका पूर्वार्धहोवे ।
तो आरूढकाभी पूर्वार्धजानना जो
उत्तरार्धहोवे तो उत्तराईजानना ।
चाहिये तत्काललग्न और आरूढ
लग्न कविचराशि इनको विचारक
र यो प्रश्नकहनेहै उनकी वाणीमि
थ्यानहीं होती जमानविशेषमाननाहो
तीहै अथ आरूढलग्नकहनेहै प्रश्न
पूछनेवाला आदमी जिसदिशावि
षे आकरबैठे आरूढचक्रमें उस ।
दिशाकी जो राशिहै वह आरू ।
ढ जानना चाहिये ॥

अथवा प्रश्नकर्ताको कहणा चाहिये
कि जे राशिचक्रमैं कोई राशिको स्प
र्शकरे तो वह आदमी जिसराशिको
स्पर्शकरे वह भी आहुठलग्नजानणा
अथवा तिथिपत्रिका स्पर्शनहोवे।
कहीं खलेमैंकोई एकले तोउसदिनजि
सराशिविषे चंद्रमाहोवे वहभीआ
हुठजाननाचाहिये अथवाप्रश्नक
र्ता जो फल पुष्प आदि लेकरआवने
को आवे उनकीजोराशिहोवे सोआ
हुठहोताहै ऐसेबहुतप्रकारकेआ
हुठलग्नहोतेहैं औरप्रश्नकालमैंजि
सलग्नदाउदयहोवे उसकोउदयल
ग्नकहतेहैं सिंहकाहुठलग्नविषेहोवे

न॰ १॰ ६

6

सो जोफलकहाहै उसदाशाथाफल॰
हूयकाहुर्यलग्नविचहोवे सोकहना
चाहिये होर नवांश त्रिकोण केन्द्र
प्रश्नकादिन वार नक्षत्र आदिविचा॰
रकर फलकहनाचाहिये लग्नके ।
नवमेहिस्सेको नवांशकहतेहै नवां
शकाआरंभकहतेहै मेषमें मेषादि
नवांश वृषमें मकरादि मिथुनमें
तुलादि कर्कटमें कर्कटादि सिंहमें
मेषादि कंन्यामें मकरादि तुलमें
तुलादि वृश्चिकमें कर्कटादि धन
में मेषादि मकरमें मकरादि कुंभ
में तुलादि मीनमें कर्कादिनवांश॰
होतेहै आगेक्रममेंजाननाचाहिये ।

## चक्रमेंदेखो

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे | वृ | मि | क | सिं | कं | तु | वृं | ध | म | कुं | मी | |
| मे २॰ | म २७ | तु २३ | क ४॰ | मे ४॰ | म ४॰ | तु ४॰ | क ४॰ | मे ४॰ | म २३ | तु २७ | क २॰ | पल |
| वृ ४॰ | कुं | वृं | सिं | वृ | कुं | वृं | सिं | वृ | कुं | वृं | सिं | नवांश |
| मि ९॰ | मी | ध | कं | मि | मी | ध | कं | मि | मी | धं | कं | प्रमाण |
| क ६॰ | मे | म | तु | क | मे | म | तु | क | मे | म | तु | |
| सिं ५॰ | वृ | कुं | वृं | सिं | वृ | कुं | वृं | सिं | वृ | कुं | वृं | |
| कं २ | मि | मी | धं | कं | मि | मी | धं | कं | मि | मी | धं | |
| तु | क | मे | मं | तु | क | मे | मं | तु | क | मे | मे | |
| वृं | सिं | वृ | कुं | वृं | सिं | वृ | कुं | वृं | सिं | वृ | कुं | |
| ध | कं | मि | मी | धं | कं | मि | मी | धं | कं | मि | मी | |

अब और प्रकारसें नवांशज्ञान कहते हैं
अश्विनी आदि नक्षत्रों के प्रथम आदि च
रणों में मेष आदि राशियों के नवांश हो
ते हैं जैसा अश्विनी के प्रथम चरण में ।
मेष का नवांश हुआ दूसरे चरण में वृष का ।

न॰ नवांश तीसरे में मिथुन का चौथे में
र॰ कर्क का नवांश भरणी के प्रथम चर
१ ण में सिंह का नवांश होता है इत्यादि
क नवांश जानने चाहिये होरराशि के
तीसरे हिस्से को द्रेकाण कहते हैं चर।
लग्न में दश अंश तक लग्न का स्वामी द्रे
काण स्वामी होता है आगे बीस अंश त
क लग्न से जो पंचम राशि है उसका स्वा
मी द्रेकाण का स्वामी है आगे तीस अं-
श तक लग्न से नवम राशि का स्वामी
द्रेकाण का स्वामी होता है अर्थात् चर
लग्न में प्रथम पंचम नवम राशि के स्वामी
द्रेकाणों के स्वामी होते हैं स्थिर लग्न वि
षे नवम लग्न पंचम के स्वामी प्रथमादि

द्रेकाणकेस्वामीहैं औरजो द्विस्वभा॰
वलग्नहोवे तो प्रथमद्रेकाणकास्वा
मीपंचमेशदूसरेकानवमेश तीसरे
कालग्नेशस्वामीहोताहैं देखोचक्रमें
कोष्टकेबीचग्रहकानाम औरराशी॰
का अंकलिखाहै ॥

द्रेकाणचक्रम्

| अंश | मे | वृ | मि | कं | सिं | कं | तुं | वृं | धं | म | कुं | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १॰ | भौ १ | श १० | शु ७ | चं ४ | भौ १ | श १० | शु ७ | चं ४ | भौ १ | श १० | शु ७ | चं ४ |
| २॰ | सू ५ | शु २ | श ११ | भौ ८ | सू ५ | शु २ | श ११ | बृ १२ | सू ५ | शु २ | बु ३ | भौ ८ |
| ३ | बृ ९ | बु ६ | बु ३ | बृ १२ | बृ ९ | बु ६ | बु ३ | मं ८ | बृ ९ | बु ६ | श ११ | बृ १२ |

अवतणिकराशिकाउदयकहतेहैं ।

नं. २. ८ सूर्योदयथों लेकर ढाई ढाई घरीतक
सूर्योदयजिसराशिकीचहोवे उसथों
लेकरीउदयहोतीहै जैसा जेष्ठमास
के बीसघटी दिनबीते किसराशीका
उदयहोगा तो अठायेबीस इसवासे
वृषथों प्रथम धनराशिहै सोधनउद-
यजानो इसीतरहसेमूलेमासोंमेजा
ननाचाहिये अवलाणिकग्रहकहते
है सूर्योदयसेलेकर बारेशआदिना-
इससहितआठग्रह ईशानआदिदि
शामें एकएकप्रहर भ्रमणकरतेहै प्र
थमप्रहरमें सूर्योदयसे आदिमबारे
कों सूर्य ईशानकोणमें वेदमापर्वे मंग
ल अग्निकोण अथ दक्षिण गुरु नैरुत्त।

8

नेमें शुक्र पश्चिम शनि वायुकोणमें
राहु उत्तरमें क्रमसे स्थितहोतेहैं आ॰
गे द्वितीयादि प्रहरोंमे वारेश आगेवि
परीतक्रमसेचलतेहैं जैसा ईशानसे
उत्तरको उत्तरसेवायुकोण इत्यादि
प्रहराणिकग्रह चोर अथवा मार्गमें
भूलाजो मनुष्य पशु आदि होवे उसका
दिग्ज्ञान करनेमें विचारलेनाचाहिये ।
जिसदिशामे वारेश अथवा बलवान्
ग्रह प्रश्नकालमेंहोवे उसदिशामेंचो॰
रादिकहना
चाहिये अ
थवादिक्
राशिकह



न. तौहै कर्कट सिंह वृष मिथुन इनमें
र. सूर्य होवे तो मेष राशिवी दिव संज्ञ
९ कहोती है कन्या तुल मीन मेषमें सू
र्यहोवे तोवृषवीदिवसंज्ञकहोती है
वृश्चिक धन मकर कुंभमें सूर्यहोवे
तोमिथुनवीदिवहोती है श्राहफल
ग्रंथमेंवी दिवराशिनकगणनाकरने
सेजो संख्याहोवे उसकोलग्नमेंमिला
कर जो राशिहोवे उसकोसत्याहफ
संज्ञाहै सत्याहफराशिकास्वामीक
विष्यसंज्ञकग्रहहोताहै ग्रंथकासत्या
हफराशिमेंस्थितजोग्रहहोवे उसको
वीकविष्यकहतेहै श्राहफलग्रंमेंस्थित
जोग्रहहै उसकानामवीकविष्यहै ऐसे

आ चार्योंने बहुत प्रकारके कविप्रकहे
है जोउदय सत्ता आरूढलग्न आरूढऔ
रकविप्रश्न इनको विचारकर प्रश्न
कहता है इसकी वाणी कभी मिथ्या।
नही होती अब इनमें कार्यसिद्धिका
विचारकरने हैं उदयलग्न और आरूढ
लग्न इकट्ठे होवे अथवा उदयलग्नमें आ
रूढलग्न चतुर्थ दशम पंचम नवम
होवे तो संपूर्ण कार्य सिद्ध होते हैं इ।
सके विपरीत होवे तो कार्यसिद्धि न
ही होती अथवा ग्रहोंका फलाफल
विचारकर फल कहना चाहिये अथ
वा आरूढमें नवम पंचम चतुर्थ द
शमराशि उदयलग्न होवे तो कार्य।

२· ३· ५· सिद्ध होती है अन्यथा होवे तो ग्रहों की
स्थिति से फल कहना अथवा उदयल
10 ग्न का त्रिकोणस्थ कविग्रह होवे तो का·
र्य सिद्धि कहनी चाहिये लग्न में दशम
तृतीय चतुर्थ का स्वामी कविग्रह होवे
तो शुभ होता है अन्यथा शुभ नहीं है·
तो ग्रहों का बल देखकर फल कहना
लग्न चतुर्थ सप्तम दशम की केंद्र सं·
ज्ञा है पंचम नवम को त्रिकोण संज्ञा है
केंद्र त्रिकोण में स्थित ग्रह बलवान है·
तो है केंद्र में बुध भौम शनि शुक्र ।
गुरु चंद्रमा सूर्य राहु क्रम वृद्धि से ।
बलवान होते हैं बुध बृहस्पति चंद्रमा
शुक्र शनि राहु सूर्य भौम क्रम से ल

मारिकेन्द्रमें बलवान्होतेहैं शुभ।
चंद्र बुध गुरु शुक्र यह शुभग्रहहैं
औरपापग्रहहैं ग्रहबलाबलज्ञान
कहतेहैं धन मीन सूर्यका मित्र
होताहै सिंहस्वक्षेत्रहै मेष उच्चरा।
शिहै तुलराशि सूर्यकानीचहै इ
नसेभिन्न औरराशिशत्रुहोतेहैं क।
न्या मिथुन तुला चंद्रमाके मित्र
होतेहैं कर्कस्वक्षेत्रहै वृषउच्चहै
और वृश्चिकनीचहै बाकीकेशत्रुहो
तेहैं चंद्रमाके वृष मिथुन कन्या
तुल भौमके मित्रहोतेहैं मेष वृश्चिक
स्वक्षेत्र और मकर उच्च कर्क नीच
राशिहै भौमकी औरसबशत्रुहैं मेष

नं. तुल वृश्चिक मकर कुंभ धन कर्कट
२. बुधकीमित्रराशीहै मिथुन कन्या स्व
११ गृहहै कन्याउच्चभीहै मीन बुधकानी
चहै ओर समशत्रुहै वृष तुला कुंभ
सिंह मिथुन कन्या बृहस्पतिकेमित्रहै
धन मीन स्वक्षेत्रहै कर्कट उच्चहै म
कर नीचहै ओर बृहस्पतिके शत्रुहै
मेष वृश्चिक मकर कुंभ मिथुन शु
क्रकेमित्रक्षेत्रहै वृष तुला स्वक्षेत्रहै
मीन उच्चराशि कन्यानीच ओरसम
शत्रुहै वृष कन्या मीन मिथुन शनि
केमित्रहै मकर कुंभ स्वगृह तुलाउ
च ओर मेष नीचराशि ओरमेषसिंहश
निकेशत्रुक्षेत्रहै मकर तुल मिथुन ।

यन मीन राशहै मित्रहै कुंभराशदा
सत्रुहहै वृश्चिक राशदा उचहै वृष ।
नीचहै होर मेषदृषशत्रुहै नीचराशि
मैं ग्रहोंका चतुर्थांशबलहोताहै शत्रु
राशिविच ग्रहकोअर्धबलहै मित्रके ।
घरमेंपादोनबलहोताहै स्वक्षेत्रमें संप
र्णबलहै उच्चराशिविषेग्रह अतिबल
वान्होताहै अबग्रहोंकेस्वरूपकहते ।
हैं सूर्य क्षित्रग्रहहै लाल पुष्प क्ष ।
त्रियजाति वनचार वनवस्त्र चण ।
क धातु पित्तलधातु पचासवर्ष ए ।
श्रायुसूर्यकीहै वेदमाचर ग्रह धा ।
त स्त्री जाति ब्राह्मणवर्ण गोलाका
र श्वेतरंग अनेकपार कोस्य धातु ।

न: मतर १: वर्ष आयुर्दा है भौमचरग्र
र: हस्ते याने रक्तवर्ण पृष्ठ चरद्वार
ए मट्टर याने मामायाने डमरू स्वरू-
प घोड्या ५ वर्ष आयु बुधहि स्वभा-
व है अर्थात चर और स्थिर स्वभाव
है जीवग्रह नपुंसक द्विपाद हरि-
दर्ण त्रिकोणाकार वैश्यजाति सि-
काराने मुर्गीयाने वीस २: वर्ष
आयु है उत्तमजीवी द्विस्वभावग्रह-
है पुरुष पीतवर्ण छोलोंकीडाल-
याने ब्राह्मण ज्ञानी सर्वतोयाने
श्वेतकाग्राकार वीस २: वर्षकी आ-
युर्दा है शुक्रस्थिरग्रह है स्थूल स्त्री-
राशि द्विपाद श्वेतवर्ण अष्टकोणाग्र।

कार शूद्रजाती रजतधात सात ३
वर्ष आयु श्वेतधान्य शनिद्विभाव
ग्रह है धात चांडालजाति नपुंसक
कालावर्ण चतुष्पाद लोहधात मा
षधान्य सोवर्ष १० आयु मनुष्या ।
कार है राहुचरग्रह है धात शूतिनी
वजाती बहुपाद हीयग्रह दीर्घदेह
रत्नधात माषधान्य सोवर्ष १० आयु
है येयेराहुकेधात औदिइसके है
हैं सोसो संपूर्णकेतकेबीजानतेवा
हिये इसतराग्रहोंकाबलाबलविचा
रकरजो प्रश्नकहनाहै उसकी आयु
यश धन वृद्धिको प्राप्तहोनाहै चर
स्थिर द्विस्वभाव औरधात मूल जी।

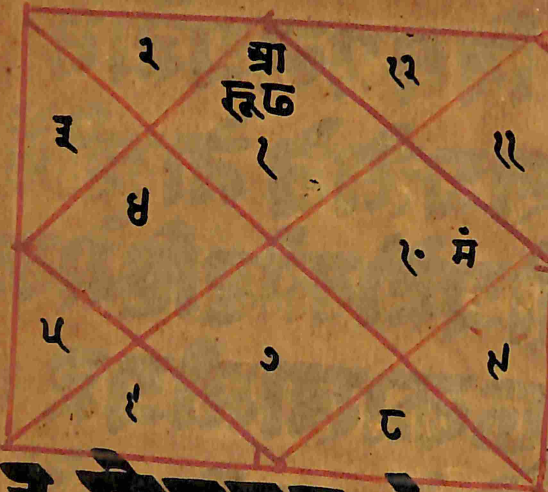
न॰ व पद क्रमसे मेषादि राशियोंको सं॰
व॰ ज्ञा है चंद्र भौम शनि राहु धातुग्रह
१२ है सूर्य शुक्र मूल ग्रह है बुध गुरु
जीव ग्रह है अब इसविषयमें विशे
षकहतेहै सूर्य चंद्रमा अपनी रा॰
शिमेंहोवे तोधातुहोतेहै अन्यराशी
मे मूलजानने शनिकेचमेंमूल॰
है अन्यराशीविषे धातुजानना बुध
अपनीराशीमेंधातुहै औरस्थानमें ।
जीवहै उदयलग्न और आरूढ लग्न
मे धातुग्रहहोवे उनकोधातुग्रहहै॰
वे अथवा शुक्रहोवे तो धातु रा॰
शिकी दृष्टिहोवे तो कविता धा॰
तु राशिमें होवे तो ।

धातप्रश्नजानना इसेरीतीकवेमूल
होवे तोमूलप्रश्नजानो जोइनस्थानो
में जीवग्रहहोवे तोजीवप्रश्नजानो ।
ऐसेग्रहोंसेभी विचारकरनाचाहिये ।
जैसा धातराशिमें मूलग्रहहोवे तो
जीवप्रश्नजानो मूलराशिमेंधातग्र
हहोवे तोभीजीवप्रश्नजानो धातरा
शिमेंजीवग्रहहोवे तोमूलप्रश्नजा
नो दोनोंमेंजोबलवानहोवे सोरूप
रहेगाहै निर्बलहेरहोगाहै ऐसेरू
परनीचउच्चानकरभी विचारकरना
चाहिये दोनोधातहोवे तोधातप्रश्न
दोनोमूलहोवे तोमूल दोनोजीवहो
वे तोजीवप्रश्नजानो धातमूलजीव

नं॰ तीनोंपक्षलग्नोंमेंहोवे तोबलविचार॰
१॰ कर करनाचाहिये जबलग्नेश विष
५४ मराशीविषेहोवे तोधातप्रश्नजान॰
14 नाचाहिये समराशीमेंहोवे तोजीव॰
होनाहै लग्नमेंविषमराशीमें चेष्टमा
होवे तोधातप्रश्नजानो लग्नमें सम
राशिमें चेष्टमाहो तोजीवप्रश्नकर॰
ना मृत्तिकाद्योंलेकर सुवर्णतक
कीधातसंज्ञाहै रत्नसेलेकर वृक्षत
कमल औरकीटसेलेकर राशीत॰
कजीवसंज्ञाहै अथनष्टप्रश्न मुष्टिप्र
श्न मनमेंचिंतितवस्तुका ज्ञानकरने
केवास्ते पूर्वाचार्योंने कठिनउपाय।
लिखेहैं परंतु मैंने इसकेवास्ते सबसे

ला उपाय कियाहै विषमलग्नहोवे
तौ पुरुषचोर समलग्नहोवे तौस्त्रीचो
र पुरुषग्रह ऊँचराशी ग्रहोंकी दृष्टिमें क
हनाचाहिये ग्राह्यकेस्वामीग्रह ।
जिसदिसाकास्वामीहोवे उसदिशामें
चोरगया कहनाचाहिये ग्राह्यकेश
और षष्ठेश इन्होंमेंचोरकास्वभावजा
ननाचाहिये ग्राह्यकास्वामीअपनी
राशिमेंहोवे तौचोर अपनेग्राममेंहो
गा जबग्राह्यकेशमित्रकीराशिमेंहोवे
तौचोर अपनेघरमेंहोगा जो शत्रुकी
राशिमेंहोवे तौ चोरदूरदेशमेंजान
ना १ जो ग्राह्यकेश उच्चराशिमेंहो ।
तौगतवस्तुकामिलनाबीलाभहोताहै

नं. १५




जोलग्नमें तीसरे । पापग्रह होवे तो नष्टवस्तुका सतावीलाभहोताहै २




३ योनवम पंचम तृतीय सप्तममें शुभग्रहहोवे तोनष्टवस्तुका सद्य लाभ होताहै ३ ४ यो तृतीय पंचममे । शुभग्रहहोवे







तोभीनष्टवस्तुकालाभ होताहै ।

५ योलग्नमेंकेतुहो वे तो मघलाभहो ताहै ॥







६ मकर कर्कट क न्या एन प्रश्नके ल ग्नहोवे तो नष्टव स्तुकालाभहोताहै

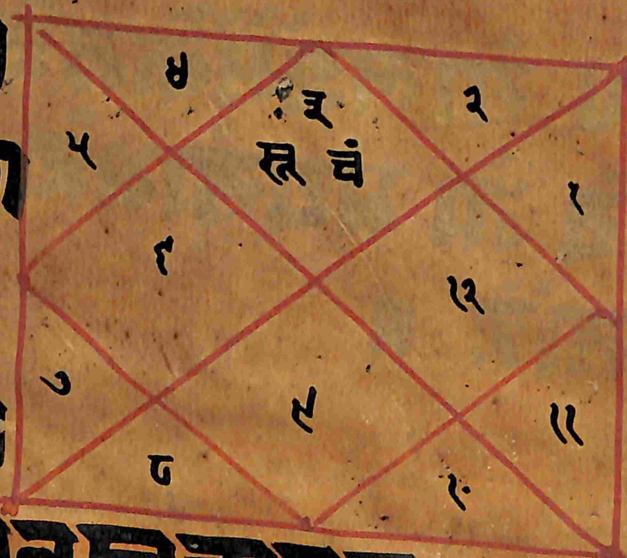



७ पंचमस्थानका पति कविग्रहो तोलाभहोताहै




८ शुभमस्थानमें बृ: प हस्पतिहोवे तो मघःलाभहोताहै ।

न॰ ९ सूर्यचंद्रमा ल
र॰ ग्नमेंहोवे तो मना
१६ वीकार्यसिद्धिहो
तीहै इतिनष्टला

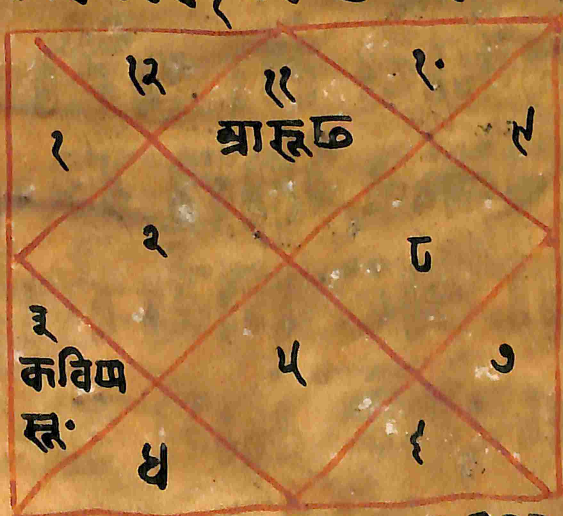



भज्ञानं अथगुप्तिवस्तुज्ञानम् ॥
नष्टवस्तुकीचिंता औरगुप्तिचिंतामे
भी पूर्वोक्तधातुमूल जीवकाविचा
रकरनाचाहिये प्रश्नकर्ता ऊपर ।
को मुष्टिकरै तोमूलप्रश्नहोनाहै म
ध्यमुष्टिहोवे तोधातु अधोमुष्टिहोवे
तो जीवहोनाहै अथवा प्रश्नकर्तापु
रुष प्रश्नकालमें प्रथमआकारांतश
ब्दका उच्चारणकरै तोधातुप्रश्नजान
ना जो इकारांतशब्दबोले तोमूलप्रश्न

उकारांतनशब्दउच्चारणकरे तोजीव
प्रश्नहोताहै उदय आरूढ केन्द्र क
विष इनचारोंके बीचमें जोबलवा
न् ग्रहहोवे उससेंप्रश्नकाफलकह
नाचाहिये अथवा से[illegible]ग्रहोंमेंजो।
बलवान्‌ग्रहहोवे उससेफलकहना
चाहिये परंतु [illegible]कथाकवि
चारैंकहनाचाहिये ग्रहोंकाबलाब
लदेखकर फलकहना सतावी।
नहींकहना अबग्रहोंके धातु मू।
ल जीवकहतेहैं पिंगल कांस्य ना
ग सिक्का सुवर्ण रजत लोह पह
क्रमसेसूर्यादिग्रहोंकीधातुहै रा
हुकाबीलोहाहै पर शुभ पका।

न॰ दाफल कष्टफल केंद्रमूल वली
र॰ यहचेष्टमादिकग्रहोंकेमूलहै सूर्य
१२ दामूल वृत्तकीवचा ग्रोरकेदहै ग्र॰
हैंकाबलाबललेकर छोटी वडी
बात ग्रादिवस्तुकहणीचाहिये ।
जोबलवान्हो तोवडीनिर्बलहोवे
तोछोटीकहणीचाहिये ग्रथमूक
प्रश्नविचार १ लग्नमें ग्राहूढराशि त
तीय षष्ठ नवम द्वादश होवे तोमूः
तकार्य ग्रर्थात पीछेहोगया जोका
र्यहै उसकीचिंता कहणीचाहिये ग्रौ
रलग्नमें ग्राहूढराशि प्रथम एकादः
श द्वितीय पंचमहोवे तो भविष्यकी
चिंताकहणी प्रथम चतुर्थ सप्तम

दशमहोवे तोवर्तमानकार्यकीचिंता
कहनीचाहिये आहूठ केंद्र कविष्ण
इनकाविचारकरफलकहणा और
इनमेंस्थितजो ग्रहहोवे उसकोंबी ।
विचारीलेना जैसे मिथुन कन्या ध
ल राशीआहूठादिस्थानोमेंहोवे तो
मनुष्यकीचिंताकहनी गुरु शुक्र ह
ये वेदमा आहूठादिस्थानोंमेंहोवे
तोभी मनुष्यकी चिंता जाणे ।

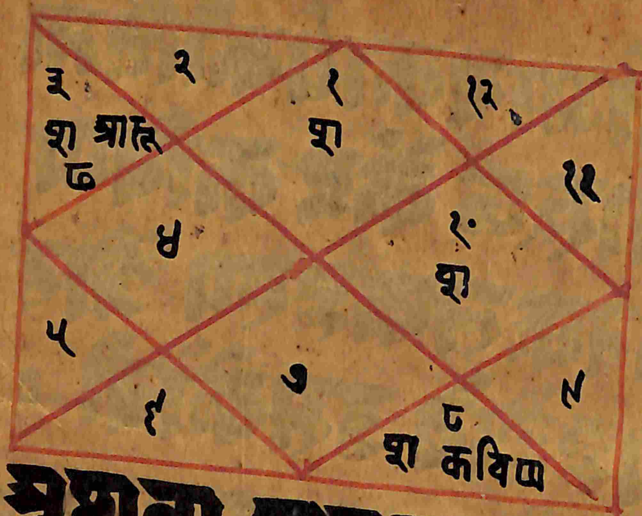




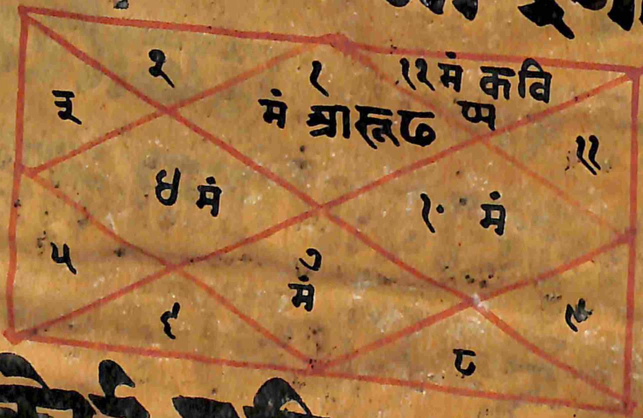


पूर्वोक्त स्थानोंमें शनिहोवे तोनष्ट

नं.
२.
१८



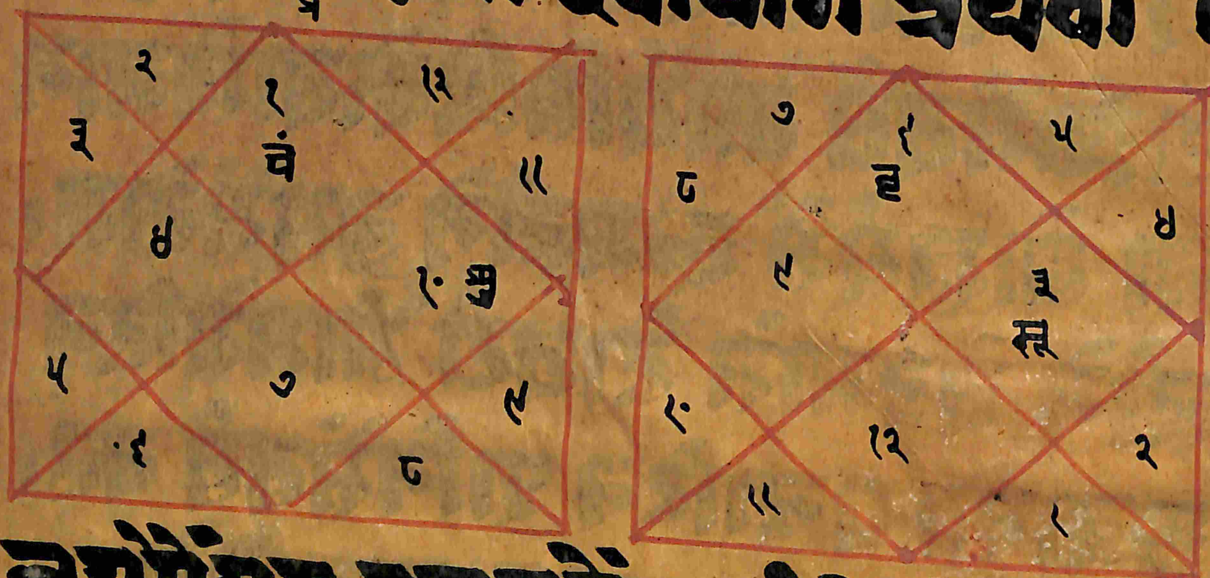

स्रूकी विनाश।
ने जो दूजे स्था
ने विच मंगल
होवे तो लड़ाई।
अथवा शत्रुका प्रश्न जाने जो दूजे
विषे राहु होवे
तो रोगीका प्र
श्न जाने इन




में भिन्न होकर कोई राशि अथवा
ग्रह दूजे स्थाने विषे होवे तो ग्रहों
का बलाबलविचारकर धातु मू
ल जीव प्रश्न कहना अब कार्य सि
द्धिके वास्ते काल लिखते हैं भोम श
नि राहु केतु पापग्रह दूजे में होवे तो।

इकावरी सत्रेत्रमें होवे तो इकाटि
व मित्रकीराशिमें महीना शत्रुकी
राशिमेंवर्ष कार्यसिद्धिकेवालेजान
ना योमहर्यमें वृमहीने त्रयमेंदोम-
हीने चंद्रमामे दोघडी भोममेंदिन
शुक्रको पन्द्रादिन शनिमेंवर्ष का-
र्यसिद्धिकाकालकहनाचाहिये ।
अथवा प्रश्नलग्नमें जवचंद्रमाश्रा-
वे उतनाकालकहणा एवंतु यहव
रलग्नहोवे तोजानना स्थिरलग्नमें
इसकाहूना जो द्विस्वभावलग्नहोवे
तो त्रिगुणकालजानना इतिश्रीम-
हाराजाजयाविविविनभाषानवरत्न
मालायोमष्टादशमर्गः । अथफला

न॰ फलमर्गोरेभः लग्नमेंचंद्रमा दशम॰
र॰ में शुक्रहोवे तो एकयोग अथवा ।
१८




लग्नमेंगुरु दशममें सूर्यहो तो दूस
रायोग इन्होदोनोयोगोंविषे कार्य
सिद्धहोताहै स्यान विचारमेंबलाब
ल देखकर फलकहणा प्रश्न लग्न
अथवा आरूढमें कविष्ण होवे हो
र त्रिकोणमें लग्ननवांशमें और के
द्रमें एकादशामें बलवान् शुभग्रह
होवे तो शुभफलहोताहै भाग्यवान्

कीर्तिवान् प्रतापी होता है जो मनमें
चिंतितकार्य सिद्ध होता है पीछे सप्त
दायमें जो शुभाशुभ विचार कहा है
सो संपूर्ण इहां
भी विचारणा
यो प्रश्नकालमें




संपूर्ण शुभग्रह
केंद्रमें अष्टमें बारमें पापीग्रहोंकी रा
शीमें स्थित होवे तो प्रश्नपूछनेवाला



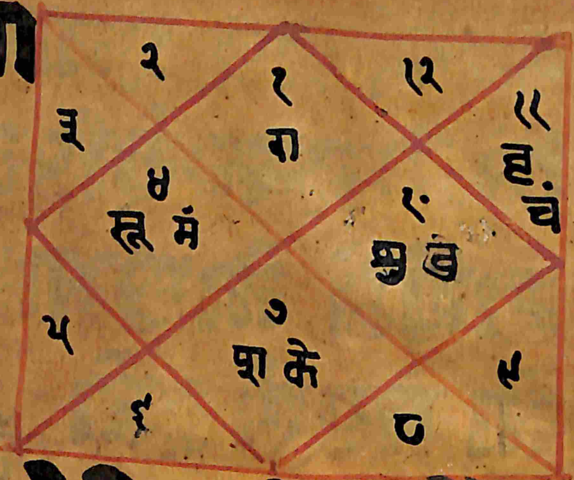

दुःखसमुद्रमें म
ग्न होकर पृथिवी
में भ्रमण करता
है केंद्रमें पापीग्र
ह होवे दशमघरकी राशीमें शुभग्रह होवे

न: ते शुभफलहोता

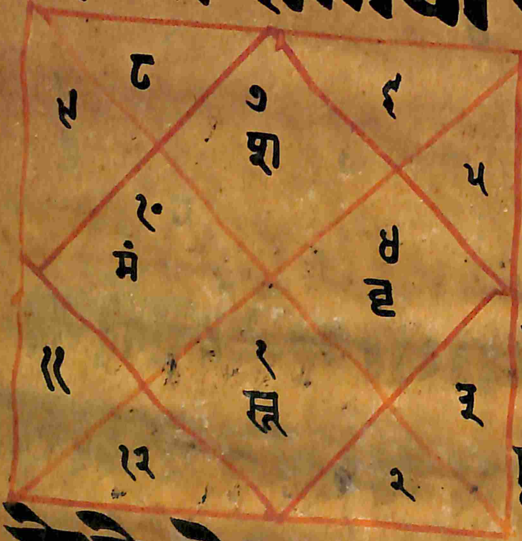
२: है येपूर्वोक्त ग्र

३: ह उच्चमें होकर

इन स्थानोंमें हो



वे तो मनाकी कार्यसिद्ध होता है



होर ये पापीग्रह

शत्रुनीच राशिमें

स्थित होकर छ ।

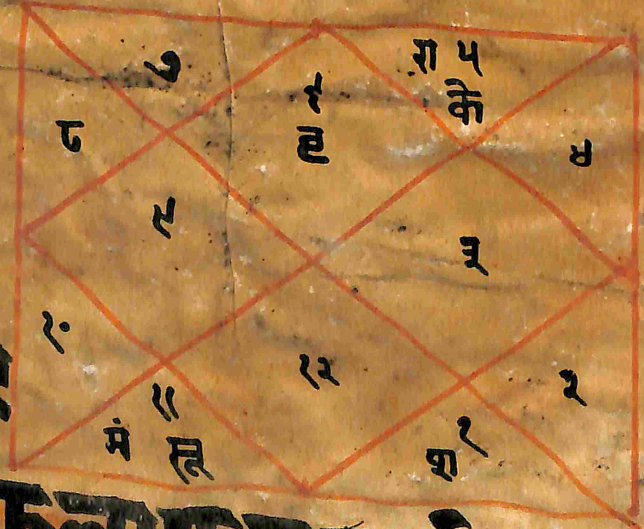
अष्टम द्वादशमें ।

होवे तो प्रश्नक

र्त्ताका भाग्य न

ष्ट होता है राजा

उसका सर्वस्व ह



र लेता है इतिफलाफलसर्गः ॥

अथजय पराजय प्रश्नारंभः आरूढ
ढमें लग्नमें कविथमें शुभग्रहहोवे
तो जयहोताहै

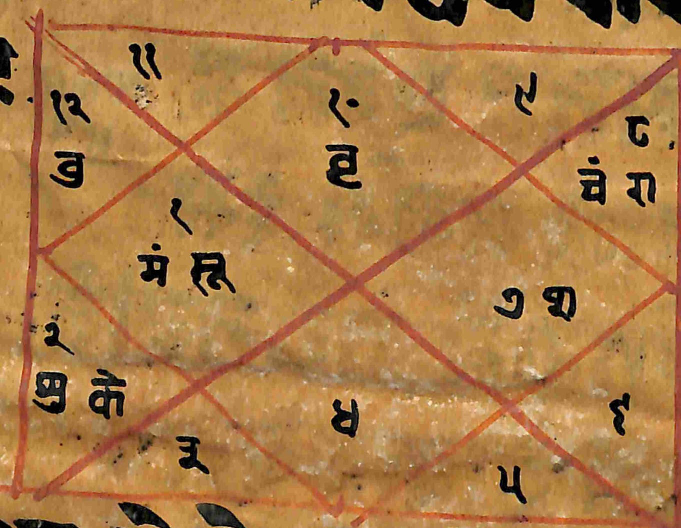


प्रह किसीका
मतहै परंतु ह
मारे मतमें इस
योगमें जयनहीहोती परंतु बड़ादुः
खी होकर पराजयकोप्राप्तहोताहै

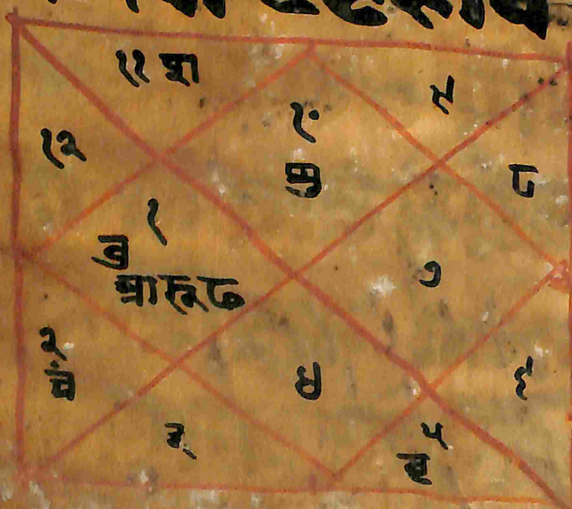


प्रश्नकालमें शुभग्र
ह उच्चका स्वग्रहमें
होवे अथवा वेधः
केन्द्रमें होवे तो प
राजय होताहै. धनका नाशहोता
है दरिद्रीहोकर पृथ्वीको भ्रमणक

नं॰ रता है यदि प्रश्नकालमें शुभग्रह ।
२॰ शत्रुनीचराशिमें होवे अस्त होवे औ
२१ र पापीग्रह उच्चआदिबलयुक्त होवे
केंद्र त्रिकोणमें होवे तो निश्चय कर
के जय होता है
प्रतापवृद्धि हो
ती है राज्य प्रा
प्त होती है ॥




कदाचित पापीग्रह होवे अपने मित्र
करके दृष्ट होवे और आरूढलग्न




त्रिकोणकेंद्र नवां
श एकादश इन
स्थानोंमें शुभग्रह॰
होवे तो जय होता

है स्त्री पुत्र आदि हावे सामहोताहै

इति जय पराज

य प्रश्नः सूर्य भौ

म शनि राहु नी

च राशिमें स्थित

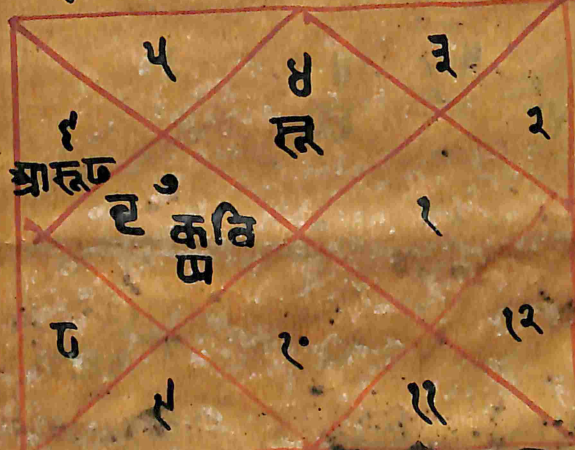



होकर कविष्णहो

वे तो लाभहोता।

है आरूढ लग्नके

नवांशका केंद्रमें।




पापग्रहहोवे तो बहुतलाभहोता

है यो कविष्णराशिमें शुभग्रहहो।

वे तो लाभकानाशहोताहै लग्न

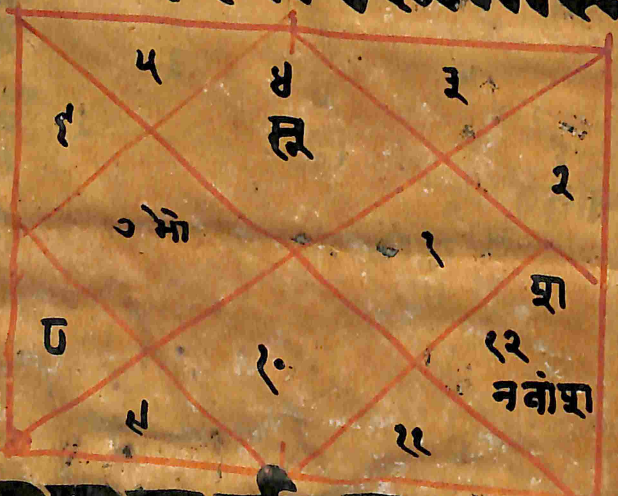
और आरूढमें पापीग्रहहोवे तो

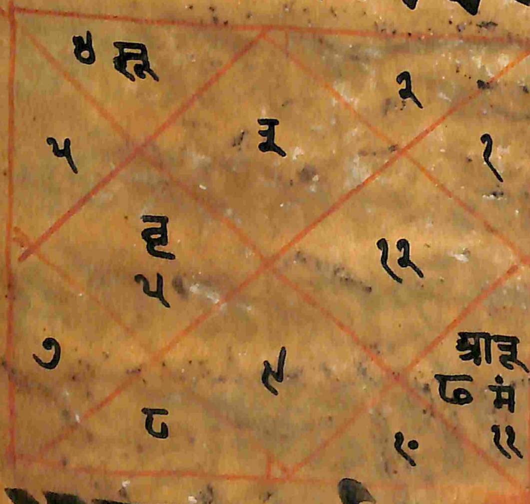
लाभकी हानि होतीहै यो केंद्र

नं॰ २॰ ३२



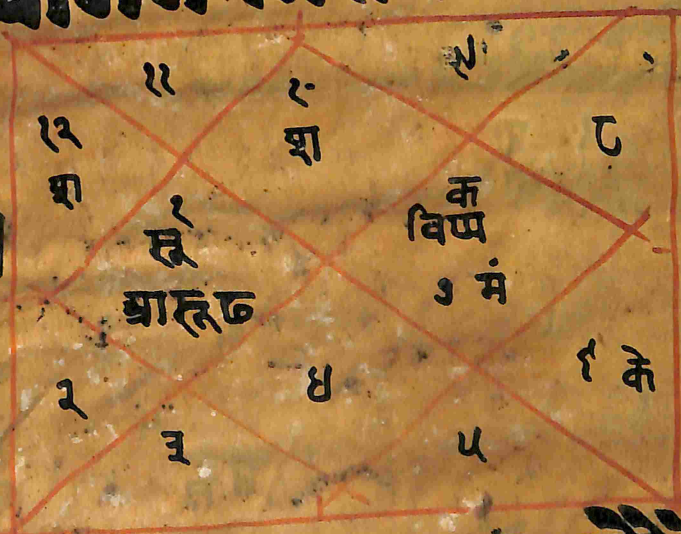

यो केंद्र और एका
दशके नवांश ।
नवांशमें पापरा
शि अथवा पाप
दृष्टि होवे तोभी कार्यहानि होती है
कर्कलग्नमें शुभग्र
ह होवे आठमें
पापराशि होवे पा
पग्रहयुत होवे तो




प्रश्नकर्ता अपना
संपूर्ण धननाश
करके पृथ्वीमें भ्रम
ण करता है इतिला
भालाभप्रश्नः अथ मावकप्रश्नारंभः

अष्टमस्थान पृथिवीमें जो जीव हैं उन
सम्पूर्णोंका मारकस्थान इसलग्नमें अ
ष्टममें होता है जन्मकालमें जन्म ।
राशि अष्टम होती है जन्मलग्नवा प्र
श्नलग्न अष्टम करिके नवांश औ
र त्रिकोणमें बलवान् पापग्रह प
ड़ाहोवे इसयोगमें जिसका जन्म
होवा प्रश्नकरे
रोगीका उसका
मरण सनावी ।
होता है अथवा




लग्नथों छठ सप्तम अष्टम स्थानमें
वेइसा पापग्रहयुतहोवे तो शीघ्र
मरणहोता है लग्नथों दशममें ।

नं. २. १३




पापग्रह होवे वा
दश स्थ होवे ।
तीसरे वा एका
दशमें कविप्र
हो अथवा लग्नके
अंतमें जन्म होवे औ
र शकटयोग होवे
तो मृत्यु होता है ।







लग्नसे अष्टम सू
र्य होवे शनि भौम
दूसरे होवे तोरम
होता है सप्तमस्थानमें शनि भौम हो
वे द्वादशस्थानके स्वामीकी दशा हो
वे अथवा दूसरे सातमे आठमें बारमें



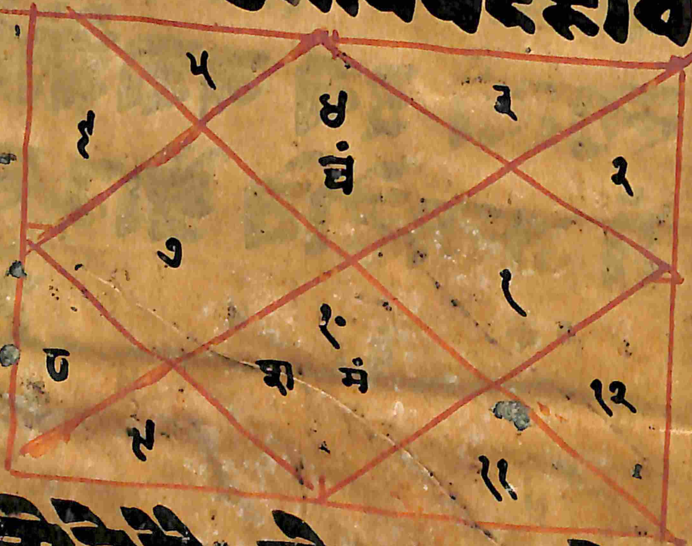
राहुहोवे तो भी
अरिष्ट होताहै
पुष्य विशा पूर्वा
षाढा उत्तराफा
ल्गुनी इन नक्षत्रोंके दूसरे चरण
में जन्महोवे और लग्नके दूसरे बा



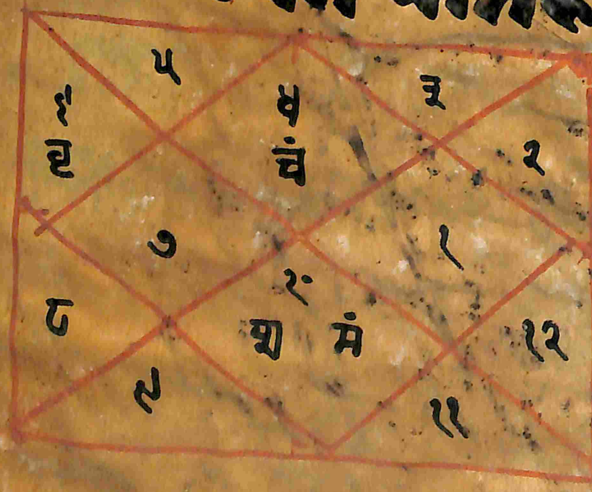
रेमें पापीग्रह हो
वे उयमें अष्टम
स्थानमें चंद्रमाहो
वे मृत्युहोवेगा ।
सूर्यके सप्तमें शनि अथवा मंगल
होवे तो उसका
पिता मनावी मृ
त्युहोगा ॥



नं: चंद्रमाके सप्तम शनि भौम होवे
२: तो उसकी माता सतावीसनहोवे
२४ मी पंचम अथवा दशम सूर्य चंद्र
मा शनि भौम करके युक्तपर्येरहोवे
तो उसबालक
है माता पिता
मामा और वह
बालक पह बा




रे सबको नाशहोते हैं यो इन यो



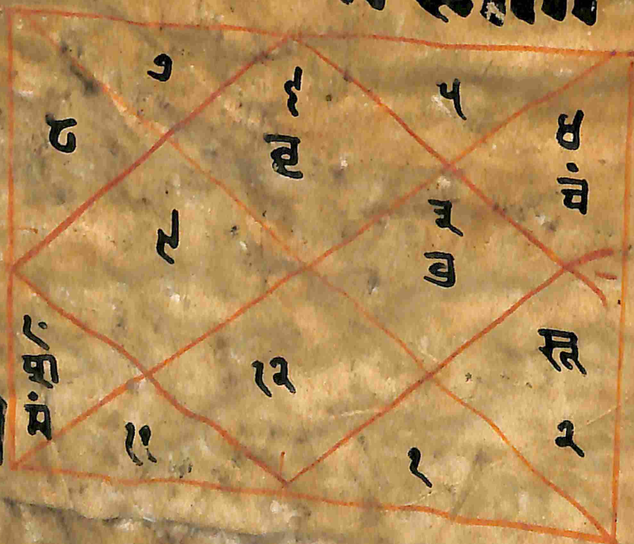

गोमे पूर्णवली
बृहस्पती योगक
रे अथवा देखे तो
नाशका भंग होता
है ॥

और शुभग्रह उक्तादि शुभस्थानमें ।
स्थित होकर योगकरे तोभी मारक
योगकी हानीहोतीहै बहु बालक ।
दीर्घायु होताहै यहबात जन्ममें ।
और प्रश्नमें विचारणी जानकके ।
विचारमें द्वितीय सप्तम शुभ मा ।
रकस्थानहै इनके स्वामी अथवा ।
इनमें स्थित ग्रह मारकहोतेहैं ।
मारककीदशामें मृत्युहोताहै अष्ट ।
म षष्ठ द्वादश तृतीय एकादश ।
एहइस्थानहै इनके स्वामीवी मार
कहोतेहैं केन्द्रका स्वामी शुभग्रह ।
और केंद्रस्थ शुभग्रहवी मारक ।
होताहै इनमें जो बलवानहोवे ।

नं॰ रं॰ २५

उसकी दशामें म्रत्यु होता है ३९ । स्थानका पति ग्रह शुभ स्थानपति केसाथ योग करता होवे तो ३९ । ग्रह शुभ फल देता है और शुभ ग्रह पाप फल देता है इति मारकसर्गः

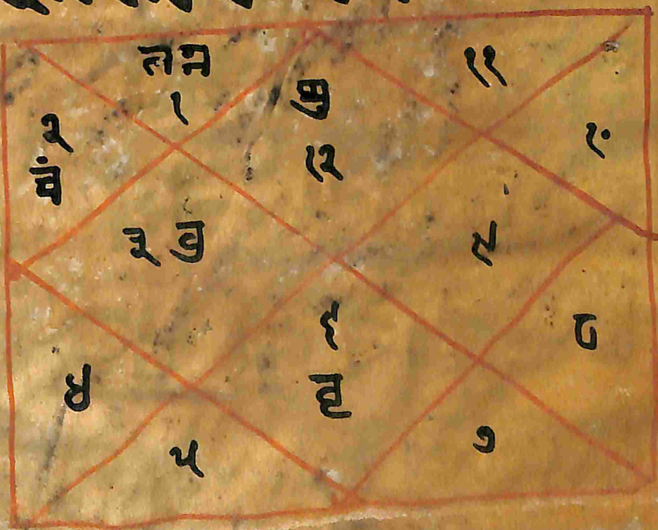
अथ योगायोगसर्गारंभः लग्न आः ह्ठ केंद्र कविण त्रिकोण और लग्नका नवांश इनमें उच्च स्वक्षेत्रस्थ ग्रह होवे ऐसे योगमें जिसका जन्म होवे वह इंद्रके तुल्य राजा होता है संपूर्ण पृथिवीको शासन करता है यदिसंपूर्णग्रह उच्चमें हो



वे तो अथवा संपूर्ण शुभग्रह लग्नमें
होवे तो चक्रवर्तीराजाहोताहै उस
कीस्तुति त्रिलोकीमें होतीहै चंद्र.



चंद्रमासे अथवा लग्नसे दसवे वारमें
उच्चस्थ शुभग्रहहोवे और लग्नकी शु
भग्रहकी उच्चराशीहोवे चंद्रमासे
त्रिकोणकेंद्रमें
शुभग्रहहोवे तो
भरतयोगहोता
है इसयोगमेंजि



नं. सका जन्म होवे सो भारतखंडका रा
१. जा होता है यह पूर्वोक्त ग्रह इन उक्त
२१ स्थानोंमें बलही।




न होवे तो मंत्रीहो
ता है शुक्र ८ में औ
र लग्नमें उच्चग्रहहो
वे तो राजा होता है चंद्रमाकी राशि
में और लग्नमें उच्च होवे तो राजा हो
ता है अमावस्या

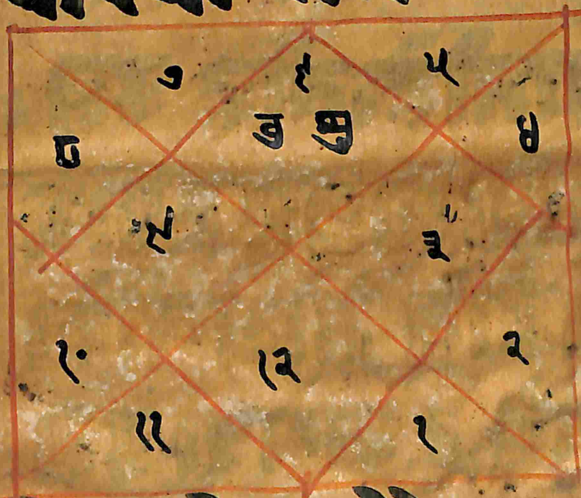



को जन्म होवे
और चंद्रमाकी
दोनो तरफ शुभ
ग्रह होवे तो धनी होता है चंद्रके
द्वितीय द्वादशके स्थानी शुभग्रह।

लग्नमें दूसरे चारमें होवें तो धनी होता है हाथी घोडे रख ता है दशमेश

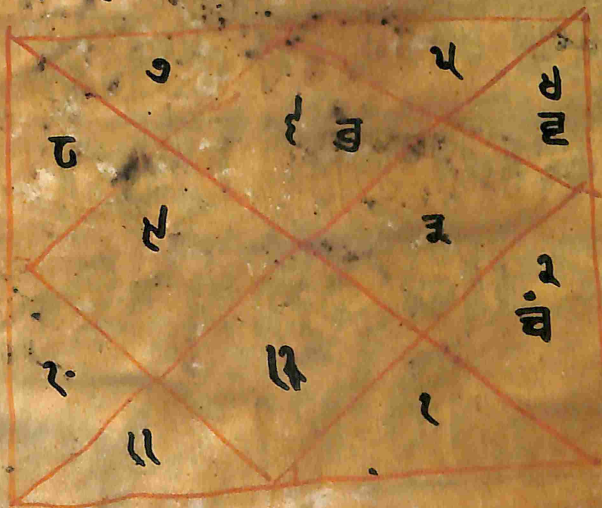


उच्चमें होवे नवमेश संयोग करे । करके लग्नमें होवे अथवा लग्नेश



क्रनेशुक्र होवे लग्न अथवा लग्नपति उसका मित्र होवे तद गज लक्ष्मी ।

योगहोताहै ३ संयोगमें जिस का जन्म होवेसो चक्रवर्तीराजाहै



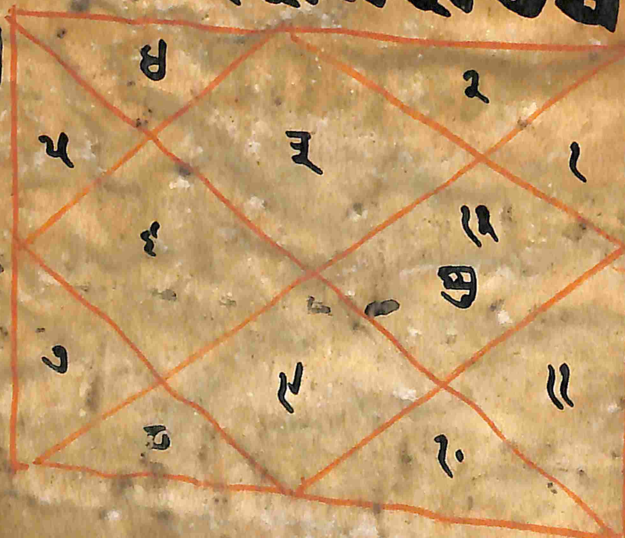
न॰ तौहै दशमघर
व॰ कास्वामी दशम
१२ कोदेखै तो पित
धनकीप्राप्तिहो



तीहै केंद्र त्रिकोणमें नवमेश और
लग्नेश युक्त होवे तो पितृधनकी



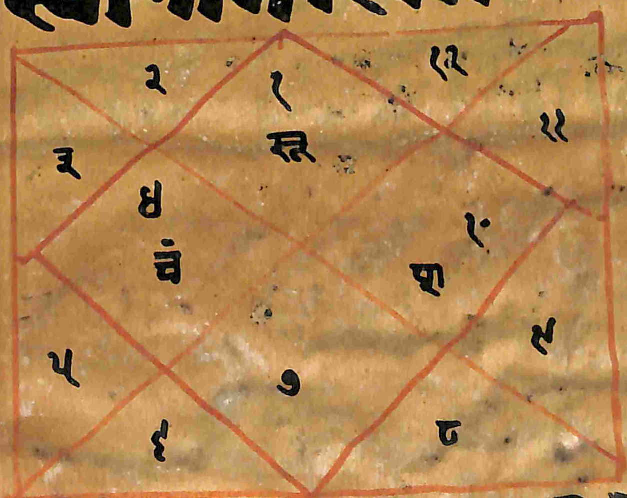
प्राप्तीहोतीहै उच्च
राशिस्थग्रह दशम
मेंहोवे तोधनीहो
तीहै दशमेश उच्च
स्थ होकर दशम
होवे और एका
दशकीउच्चग्रहहो
वे तोबहुधनयुत



राजाहोताहै दशम
पंचम द्वितीयस्थानों
केस्वामी विशेषकर
केशुभफलदेतेहैं ।



इनस्थानोंकेस्वामी उच्चस्वक्षेत्रादि ।
स्थानोंमेस्थितहोवे तोधनीहोताहै



उसका दरिद्रदूरहो
ताहै जैसे सूर्योद
यमें अंधकारका
नाशहोवे जैसे ल
ग्नमे ग्रहयोगकरेहै ऐसेही अष्टम
मेंभी जानने अबस्थानोंके स्वामि ।
योंके वशमें योगकरतेहैं अबवि ।
शोत्तरीदशा कहतेहैं सूर्य चंद्र भौ ।

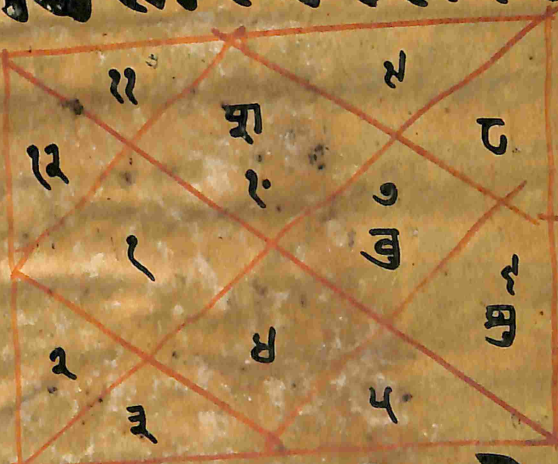
नं॰ म राहु गुरु शनि बुध केतु शुक्र प
२॰ ह नौग्रह कृत्तिकादि नक्षत्रोंके स्वा
५८ मी तीन आवृत्तिकरकेहोतेहैं क्रम।
से इनकी दशाके वर्षोंका परिमाण
सूर्य ६ चंद्र १० भौम ७ राहु १८ गु
रु १६ शनि १९ बुध १७ केतु ७ ।
शुक्र २० जन्मनक्षत्रमें दशा जान।

दशाचक्रम्

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू | चं | भौ | रा | वृ | श | बु | के | शु | |
| कृ | रो | मृ | आ | पु | ति | श्ले | म | पू | |
| उ | ह | चि | स्वा | वि | अ | ज्ये | मू | पू | |
| उ | श्र | ध | श | पू | उ | रे | अ | भ | |
| ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २० | |

नी दशावर्षोंको जन्मनक्षत्रके।
भोग्यसे गुणना सर्वर्क्षका भाग।

देणा जो लग्नविषे दिक आवे सो द
शाके वर्ष जानने ॥ ग्रहस्थमदशा ॰
काप्रमानजानना आगेक्रमसेजान
ने त्रिकोणकेपतिग्रहशुभफलदेते ॰
है केंद्रकेपति पापग्रहहोवें तो शुभ
फलदेतेहै नवमेश दशमेश अप
नीराशिमें स्थितहोवे होर परस्परदृ
ष्टा दृष्टहोवे तो

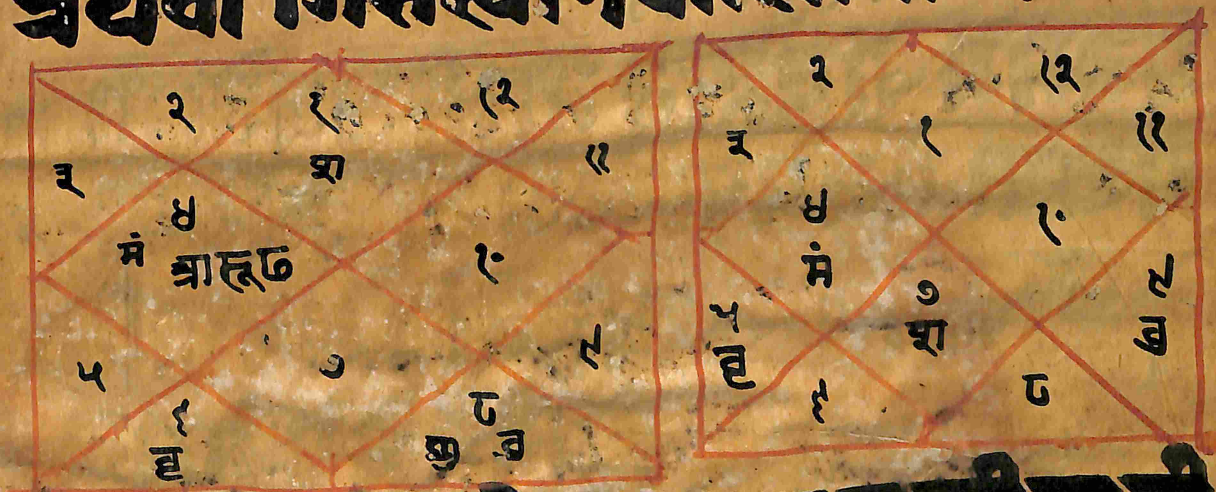


अथवा नवमेश
दशममेंहोवे औ
र दशमेश नवममें
होवे तो कुबेरके
तुल्य धनी होता
है पूर्वोक्तयोगों ॰



नं॰ में तनस्थानपति उन उन स्थानोंमें
२॰ होवे और उनकी लग्नेश के साथ
१५ मैत्रीहोवे तो योगपूराहोताहै योग
शुभहोवे तो योगवीशुभहोताहै क
थितशुभस्थानमें राहुकेतु योगकरे
तो शुभग्रहकाफलदेतेहैं इनका ।
अशुभफल [illegible]होताहै उपच ।
यमें बृहस्पति शुभ राहुहोवे तो बृ
हस्पतिके तुल्य राहु फलदेताहै ।
पूर्वोक्तयोग अपनी अपनी दशामें
फलदेतेहैं अथराज्यभंगयोगकह
तेहैं लग्नमें और आठवेंमें पापग्रह
होवे शुभस्थानके स्वामी सब अशुभ
दशामेंहोवे अथवा शत्रुनीच ।

राशीमेंहोवे तो धननाश मानहानि
और बडादुःखहोताहै एकादश घ
र तृतीय प्रथम द्वादशस्थानोंके
स्वामी शुभ वा पापीग्रह जिसस्था
नमेंहोवे उसस्थानकीहानीहोतीहै
अथवा जिसस्थानकास्वामी इनके




साथहोवे उसके शुभफलकीहानी
होतीहै शुक्रनीचस्थानमेंहोवे तो
अतिनिंदितहोताहै इतियोगसर्गः
अथपत्रमर्गम्भः कोईएकेकी

न॰ मेरे पुत्र होगा वा नहीं इस प्रश्नमें
ब॰ आरूढमें राहु होवे तो शीघ्र पुत्र
म॰ होता है अन्य होतो
शुभाशुभग्रहोंके ।
बलसें फलकहना
अथवा आरूढके

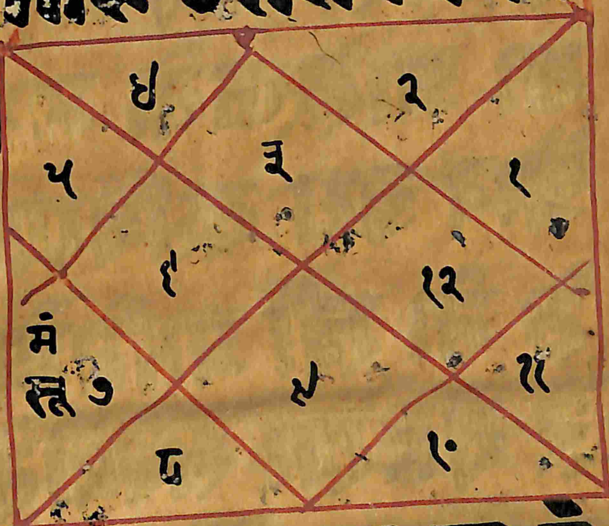



पंचममें राहु होवे तोभी पुत्र होगा ।
अथवा पंचमेश हर्ये वा कविष्य ।
ग्रह होवे पुत्रप्राप्ति ।
होती है ऐसे मंगल ।
होवे तोभी पुत्रप्राप्ति
होगी पुत्रयोगकर




नेवालाग्रह शत्रुनीचादि स्थानोंमें ।
रहितहोवे और शुभग्रहोंके शत्रु ।

नीचराशीकी पंचम न होवे तो पुत्र
प्राप्ति अवश्य होती है इसमें विपरी
त होवे तो पुत्रप्रा
प्ति नहीं होती अ
थवा पंचमेशका
बृहस्पति के साथ




योग होवे अथवा पंचमस्थान वा पं
चमेशको बृहस्पति देखे और शुभ
ग्रहकी दृष्टि नहीं होवे तो कदा




चित् पुत्रप्राप्ति नहीं होती इति पुत्रभ

न॰ गः अथमंगलसर्गः विवाहप्रश्न ।
र॰ के विषे प्रश्नकालमें आहस्थविषे ।
३१ वा आहस्थके सप्तमे वृहस्पतिहोवे
और बुध कविष्ण हो
वे तो स्त्री प्राप्तिहोती
है वह स्त्री लक्ष्मीके
तुल्य उसके घरमें




स्थिनरहतीहै अथ मंगल लग्नमें
अथवा सप्तममेंहो
वे कन्या विधवा हो
तीहै केवल अथ
सप्तम होवे तो वि॰
धवा होतीहै सप्तम वा लग्नमें
राहु केतु शनि होवे तो ॥

विधवा चक्रं



बहुतपुत्रजन्मनेवाली स्त्रीहोतीहै

परंतु आपक्लेशयु



युक्तहोतीहै ल

ग्नमें अथवा सप्त

ममें क्षीणचंद्रमा




होवे तो स्त्री रुग्ण

होतीहै लग्नसें द्

सरे सप्तमें पापी

ग्रहहोवे तो दरि




द्रणी होकर पृथि

वीमें भ्रमणकरती

है सप्तम लग्न दश

म इनस्थानोंमें शु

भग्रहहोवे तो शुभगुणोंकरके ।

नं· एक अरुंधतीके त
१· ल्य पतिव्रता होती
११ है इतिमंगलसर्गः

अरुंधती

२ १ १२
३ ह ११
४ १०
५ ७ ७
६ ८ ९

अथसामान्ययोग सर्गारंभः सूर्य
चंद्रमा एकराशी मे होवे तो ।

२ १२
३ १ ११
४
सू चं १०
५ ७ ९
६ ८

प्रश्नकर्त्ता का वि
देशगमनहोताहै
वेश्य विरोध और
मरणकेतुल्य क
ष्ट होताहै सूर्य ।
मंगल एकराशि
मे स्थितहोवे तोन
ष्टवस्तुकालाभहोता

३ १
४
सू मं २ १२
५ ११
९ ८ १०
७ ९

प्रताप प्रतिष्ठाबलवृद्धिहोवेगी ७४

सूर्यका योगहोवे




तो राज्यलाभ रोग

निवृत्तिहोगी सूर्य

बृहस्पतिका योग



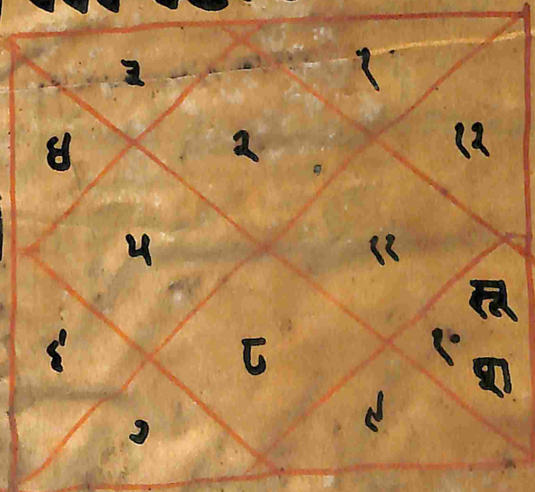

होवे तो भूमि ध

न वाहन सर्वज

न सौख्य लाभ

होता है सूर्य ।

शुक्रका योगहोवे तो मस्तः रोगः




कर्णे बंधने भवति

सूर्य शनिका योग

होवे तो बंधुश्री ।

के बीचमें जीव ।

न॰ नकरे देवता ब्राह्मणसज्जनोंसे प्र॰
र॰ डा और नष्ट वस्तुका लाभ होता
३३ है . सूर्य राहुका
योगहोवे तो बुद्धि
नाश क्लेश रोग
पापकर्महोताहै



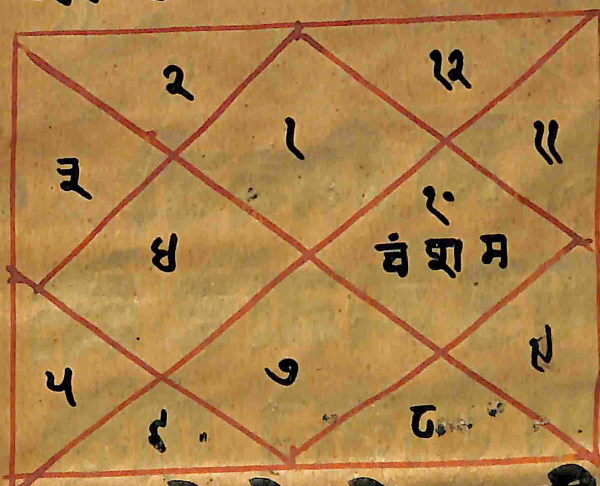

चंद्रमा सूर्यका योगहो तो संतो।
ष राज्यवृद्धिः संपू
र्ण लोकोंमे प्रतिष्ठा
ऐसे फल जानक
से भी कहना ।




चंद्रमाका



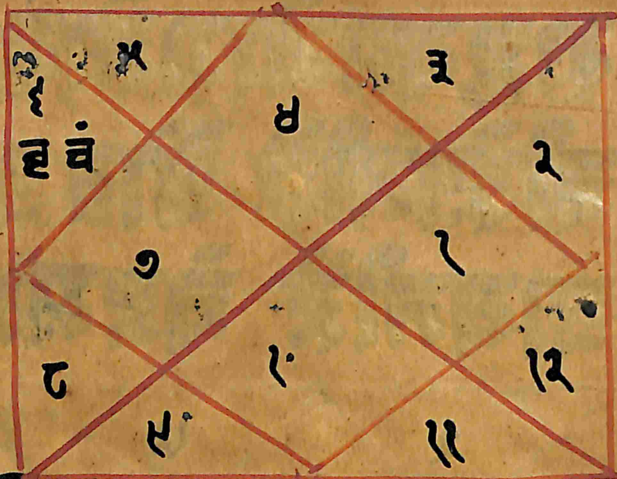
राहुकायोगहोवे धनप्राप्ति राजमें ।
रीहोतीहै और शुभवार्ता सुननेमें
आवतीहै चंद्रमा भौम शनिका ।




योगहो तो धन ।
कानाश और लड़ा
ई मैं जय होताहै
चंद्रमा बुध शुक्र ।
शुक्रहोवे तो स्त्री क्लेश अपमान ।
गृहनाश होताहै जैसे कमलकेपत्र
पर पाणी नहीं स्थित होताहै ऐसे ।
ही प्रश्नकर्ता कष्ट
शुक्र पृथ्वीमें भ्रम
ण करताहै चंद्र
माका शुक्रका ।



नं॰ योगहोवे तो धन
२॰ धान्य राज्य सुख
३४ होताहै बुध चंद्र
माका योगहो ।





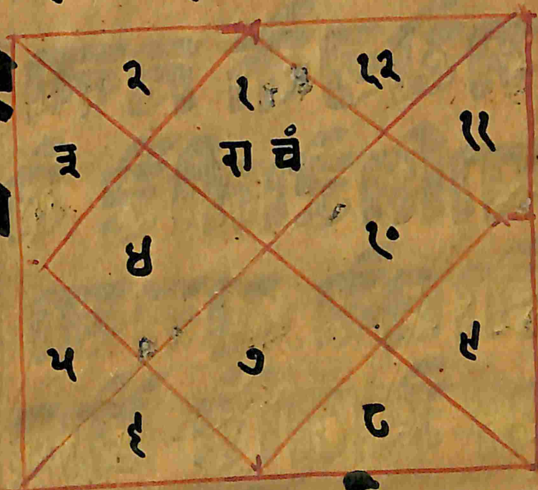


वे तो मित्रवी ।
शत्रु होताहै ले
श होकर पीछे
धन लाभ होता।
है चंद्रमा शनि
भौम योगहोवे तो
पराक्रम सौर्य शा
स्त्र वेधु इनके व

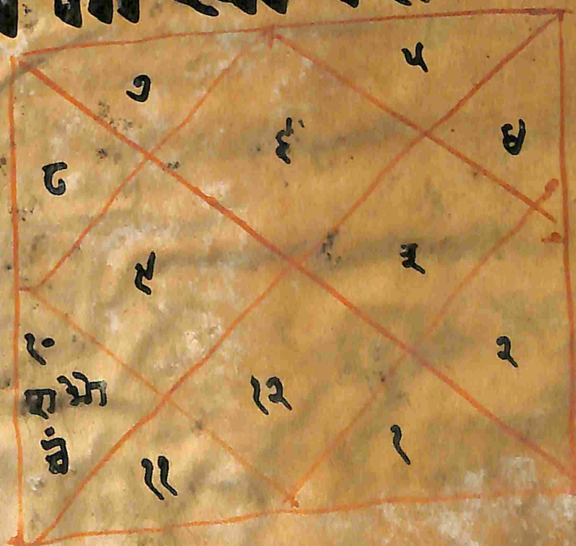



शसे धन लाभ ।
होताहै ।

चंद्र राहु योगे राज्यभयं भवति ध
नका नाशहोताहै
और तीनमहीने ।
पीछें सुखहोताहै
भोम सूर्य राहु ।




योगहोवे तो लाभ और अपूर्व वस्त
का दर्शन होताहै राजाके पास
प्रतिष्ठाहोगी और संपूर्णलोक उ.
सके अनुकूलहोजावेंगे भोम चंद्र
शनिका योगहोवे तो स्थानसे भ्र.
ष्ट होताहै प्रथम
धनको नाश क
रके पीछेंसे ला
भको प्राप्तहोता।



नं॰ है भौम शुक्रका योगहोवे तो का
२॰ मधेनुके तुल्य
३५ प्राप्तिहोतीहै सं
35 तोषमे धनला
भ होताहै और



बहुतस्त्रीका लाभहोताहै भौम
बुध ग्रहका योगहोवे तो नीच सं-
सर्ग और नीचबुद्धि नीचकी द्वारा
सें धन लाभ होता

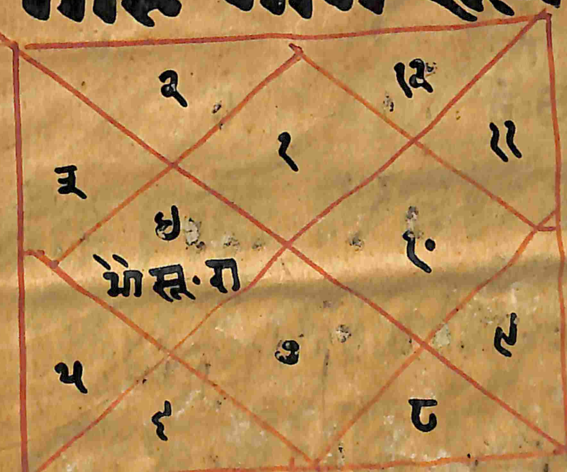


है भौम ग्रहका ।
योगहोवे तो शत्रु-
कानाश मित्र ला
भ धन भूमि वाहन सबे लाभ
होताहै । भौम शनि ॥

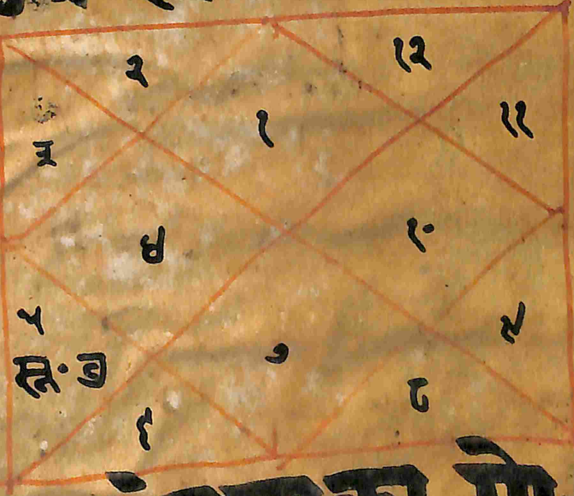
क्षीणचंद्रमाका
योगहोवे तो ।
कार्य स्त्री धन
घरका नाशहो
ताहै भौम सूर्य




राहुका योग हो
वे तो धन वैद्य पु
त्र यश कार्य इन
का लाभ होताहै




बुध सूर्यका योग
होवे तो विद्याध
न बुद्धीकी वृद्धिहो
तीहै उसके गृह
मे बहुत मनुष्य




आवतेहै बुध शुक्र चंद्रमाका यो·

नं· गहोवे तो बहुत क्लेश स्त्री पुत्र वियो
२· ग और अपना खोटा जो यत्न है ।
३१ उसकी विस्मृति
36 हो जाती है बु
ध शुक्र भौमका
योगहोवे तो वि





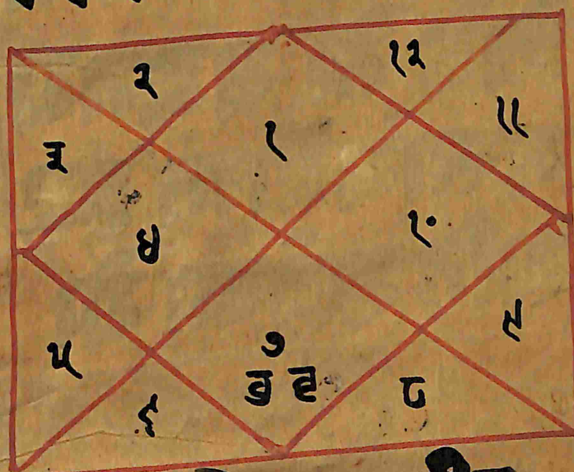


देश भ्रमण और सबे
जनोंकेसाथ द्वेषभी
पीछेसें अपने देश
विषे शुभफल हो ।




तौहै बुध केवल
उच्चादि शुभस्थानमें
होवे तो राजा तु

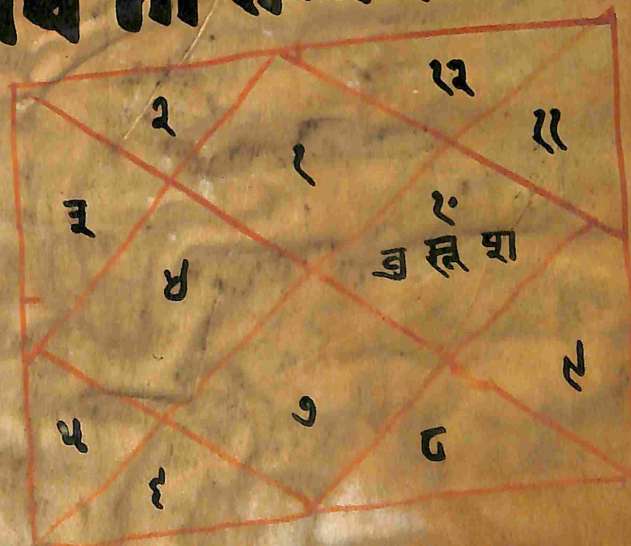
त्कलहोताहै धन विद्याकी प्राप्ति




होतीहै बुध गुरु
का योगहोवे तो।
बहुत स्त्री धनला
भहोताहै बुध शु
क्र चंद्रमा का योगहोवे तो शरीर।

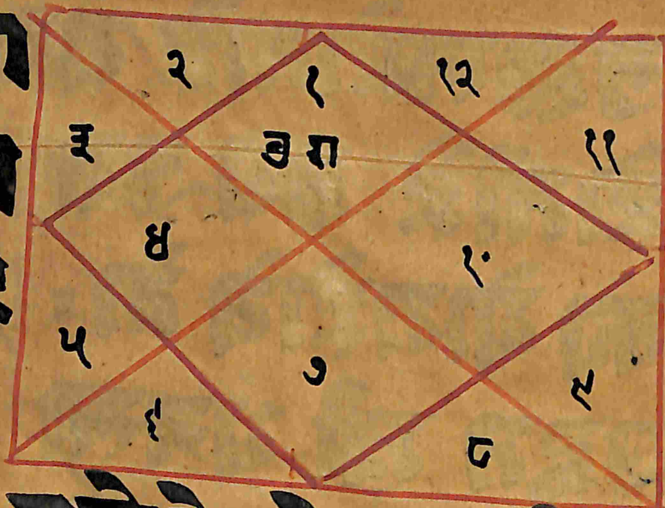


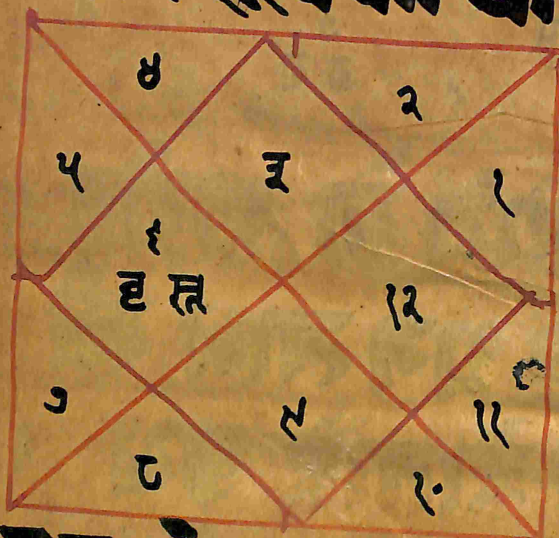

वृद्धि धन लाभ स्त्री
भोग होताहै बुध।
शनि सूर्यका योग।
होवे तो संतोष श्री।




व पूर्व स्थापित द्र
व्यकालाभ गौ
घोडे आदिपशु।
कालाभहोताहै

नं॰ अथ राहुका योग
१॰ होवे तो बहुतध
३२ नलाभहोगा बृह
स्पति सूर्यका यो





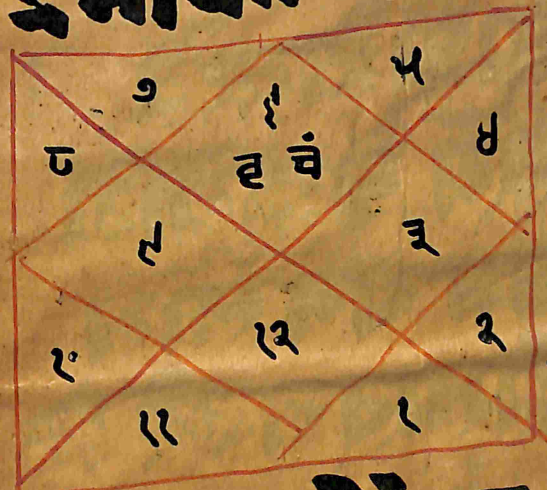
गहोवे तो कार्य ।
निष्फलहोताहै मि
त्रभी शत्रुहोजाते है



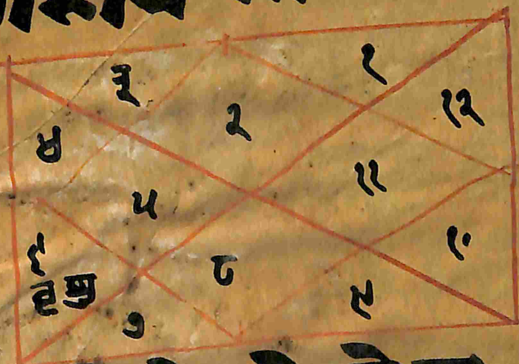
गुरु चंद्रमाका
योगहोवे तो म
नमें क्लेश और
बंधु विरोध होगा
गुरु भौम बुधका योगहोवे तो ।

क्लेश प्रतिष्ठा औ
र दरिद्रता लाभ
होता है गुरु चं
द्रमा का योग ।





होवे तो कार्य नाश
मन क्लेश होता है
बृहस्पति शुक्र का ।
योग होवे तो विद्या



और गुरु से उप
देश प्राप्ति होता
है गुरु शनि का



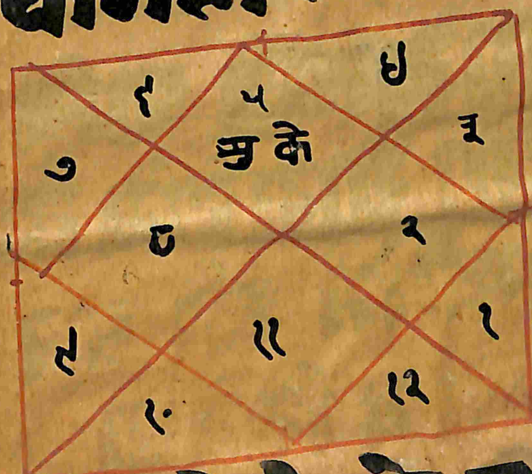
योग होवे तो पेश ।
... राज्यद्वारा धन
लाभ औरभी होता है

न॰ गुरु राहु का योग
र॰ होवे तो मित्रजय
३८ धन और शुभका
र्थकालाभ शत्रुका
नाशहोताहै।
सूर्य शुक्र योग
पुत्र धन लाभ
स्त्रीहरव लक्ष्मी वि
लासप्राप्तहोता
है शुक्र चंद्रमा
का योगहोवे तो
शत्रुनाश और पु
त्र कलत्र धनला
भहोताहै शुक्र भो
मयोगे पुत्रधनलाभः

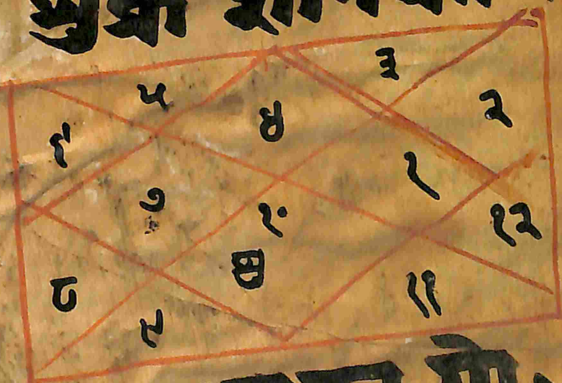
शुक्र बुध चंद्र यो
गे राज्यलाभ अथ
वा राज्यसेवया ध
नलाभः शुक्र गुरु



योगहो तो संपूर्णकार्यसिद्ध होते है



शुक्र केतुका योग
होवे तो पीडा निंदा
रोग रोदन होता ।
है शुक्र शनिका ।
योगहोवे तो राज
लाभ वृद्धि हुंडि ध
नलाभ होता है ।

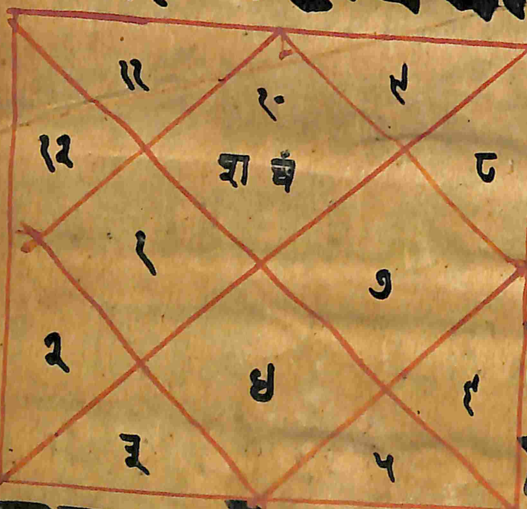




शुक्र राहुका यो
गहोवे तो राजदा
राधननाशहोगा

न: और अधैर्य स्त्री मरण दरिद्र होना
व: है शनि सूर्यका
३९ योग होवे तो गृह
39 नाश भाग्यनाश
शत्रुकी वृद्धि और




क्रोध होता है शनि
चंद्रमा योग होवे तो
धनकीर्ति स्त्री पुत्र
का लाभ विशेष ।

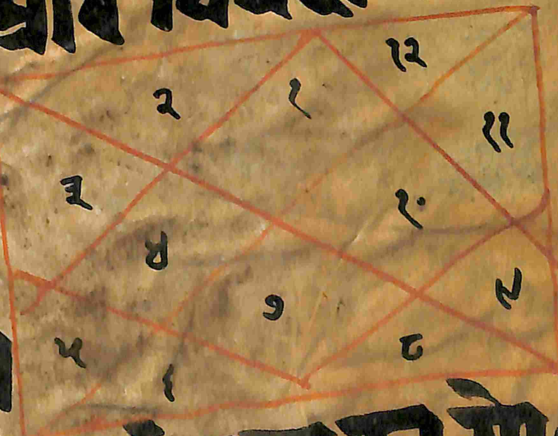
गमन होता है
शनि भौमका
योग होवे तो
धनलाभ होगा




शनि बुधका योग होवे तो विद्या
धन सुखका लाभ होता है ॥

शनि गुरु योगहोवे

तो अपूर्व वस्तुका
दर्शन पुत्र धन ला
भ इष्ट कार्य सिद्धि
होतीहै शनि शुक्रका योगहोवे तो

संतोष लाभ लड़ाई।
फिर सुखप्राप्तहोता।
है शनि राहुका यो
गहोवे तो अनेक प्रा
ग्रथा सुवर्ण लाभ और विदेश गम
नहोताहै राहु।

सूर्यका योगहोवे
तो राज्य धन वाहन
शुभलाभहोताहै राहु चंद्रमाका यो

50

नं: राहोवे तो तीर्थया
रं: त्रा मित्रलाभहोगा
थं: ऐसा जन्ममें ओर प्र
श्नमे विचारकरना






राहु भौमकायोग।
होनेसे जन्म अनेक।
सुख रत्नलाभ ओर
शत्रुकानाश होता




रै राहु बुधका
योगहोनेसे अ
क शत्रुनाश।
सुखहोताहै।



राहु बृहस्पति
का योग।

होवे तो लक्ष्मीका विलासहोताहै




राहु शुक्रका यो
गहोवे तो शत्रुवृ-
द्धि और कार्यनाश
होताहै राहु शनि




कायोगहोवे तो
भोग सब रोग ।
नाश और छाई ।
वर्ष उठवेन बडु ।
न सबहोताहै इनो मेहले योगोमे
शुभयोग शुभस्थानमें होवे तो बडु
न सबहोताहै अशुभयोग शुभ ।
स्थानमैंहोवे तो शुभफलकानाश
होताहै समुदाय सर्गोमे लेकर से.

नं· गलसर्गतक यो फलकहाहै सो·
रं· सेहएसे सावधान होकर और इनो
धा योगोंको विचारकर जो फलकह·
५१ नाहै वह पुरुष जगतविषे मान्य·
होताहै और परमहत्वको प्राप्त·
होताहै और इसग्रंथमें योगोंके ·
जो चक्रलिखेहै उनोचक्रोंविच यो
लग्नलिखेहै वह केवल दृष्टांतमा·
त्रहै ऐसीयहस्थितिकोइ लग्नमेहो
उससे योगफलकहनाचाहिये ·
इतिनवरत्नमालासंपूर्णम् ॥

| १ | २ | ३ | ४ | नक्षत्रपाद |
|---|---|---|---|---|
| चु | चे | चो | ला | अश्विनी १ |
| लि | लु | ले | लो | भरणी २ |
| अ | इ | उ | ए | कृत्तिका ३ |
| ओ | वा | वि | वु | रोहिणी ४ |
| वे | वो | क | कि | मृगशिर ५ |
| कु | घ | ङ. | छ | आर्द्रा ६ |
| के | को | ह | हि | पुनर्वसु ७ |
| हु | हे | हो | ड | तिष्य ८ |
| डि | डु | डे | डो | श्लेषा ९ |
| म | मि | मु | मे | मघा १० |
| मो | ट | टि | टु | पूर्वाफाल्गुनी ११ |
| टे | टो | पा | पि | उत्तराफाल्गुनी १२ |
| पु | षा | ण | ठ | हस्त १३ |
| पे | पो | रा | रि | चित्रा १४ |
| रु | रे | रो | ता | स्वाति १५ |
| ति | तु | ते | तो | विशाखा १६ |
| न | नि | नु | ने | अनुराधा १७ |
| नो | य | यि | यु | ज्येष्ठा १८ |
| ये | यो | भा | भि | मूला १९ |
| भू | धा | फा | ढा | पूर्वाषाढा २० |
| भे | भो | जा | जि | उत्तराषाढा २१ |
| जु | जे | जो | खे | अभिजित् २२ |
| खि | खु | खे | खो | श्रवण २३ |
| ग | गि | गु | गे | धनिष्ठा २४ |
| गो | स | सि | सु | शतभिषा २५ |
| से | सो | दा | दि | पूर्वाभाद्रपदा २६ |
| दु | थ्या | झ | ञ | उत्तरा भाद्रपदा २७ |
| दे | दो | च | चि | रेवती २८ |

इस नक्षत्र
चक्रमें जि
सके नाम
का आदि·
अक्षर प्रथ
मादि जि·
सकोष्टक
मेंआवे उस
को वह नक्ष
त्र जानना
और प्रथमादि
कोष्टमें प्रथ
मादि नक्षत्र।
का चरणभी
जानना ॥

८२

८२

| अथराशि ग्रहकुण्डली | राशि | स्वामी |
|---|---|---|
| अश्विनी भरणी कृतिका पादमेकं | मेष | भौमस्वा॰ |
| कृतिका पादत्रयं रोहिणी मृगार्द्ध | वृष | शुक्रः |
| मृगशिरार्द्ध आर्द्रा पुनर्वसु पादत्रयं | मिथुन | बुधः |
| पुनर्वसु पादमेकं तिष्य श्लेषांतं | कर्क | चंद्रः |
| मघा पूर्वाफाल्गुणी उत्तराफाल्गुणीपादं | सिंह | सूर्य |
| उत्तरा फाल्गुणि पादत्रयं हस्त चित्रार्द्ध | कन्या | बुधः |
| चित्रार्द्ध स्वाति विशाखा पादत्रयं | तुल | शुक्रः |
| विशाखापादं अनुराधा ज्येष्ठांतं | वृश्चिक | मंगल |
| मूला पूर्वाषाढा उत्तराषाढा पादं | धन | बृहस्पति |
| उत्तरापादत्रयं श्रवण धनिष्ठार्द्धं | मकर | शनिश्चर |
| धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं | कुंभ | शनि |
| पूर्वाभाद्रपदापादं उत्तरभाद्रपदा रेवती | मीन | बृहस्पति |

अथराशिज्ञानार्थं चक्रम्

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चु | चे | चो | ला | लि | लु | ले | लो | अ | • | • | • | मेष |
| इ | उ | ए | ओ | वा | वि | वु | वे | वो | • | • | • | वृष |
| क | कि | कु | घ | ङ | छ | के | को | ह | • | • | • | मिथुन |
| हि | हु | हे | हो | ड | डि | डु | डे | डो | • | • | • | कर्कट |
| म | मि | मु | मे | मो | टा | टि | टु | टे | • | • | • | सिंह |
| टो | पा | पि | पु | षा | ण | ठ | पे | पो | • | • | • | कन्या |
| र | रि | रु | रे | रो | त | ति | तु | ते | • | • | • | तुल |
| तो | न | नि | नु | ने | नो | या | यि | यु | • | • | • | वृश्चिक |
| ये | यो | भ | भि | भू | धा | फा | ढा | भे | • | • | • | धन |
| भो | ज | जि | जु | जे | जो | ख | खि | खु | खे | खो | ग गि | मकर |
| गु | गे | गो | सा | सि | सु | से | सो | दा | • | • | • | कुंभ |
| दि | दु | थ | झ | ञ | दे | दो | च | चि | • | • | • | मीन |

इसचक्रमे जिसके नामका आदि अ
क्षर जिस राशिके कोष्टकमें आवे उ
सकी वह राशि जाननी और फल

ग्रे यह तीन प्रकार नामके आदिमें
होवे तो क्रमसे इनकी जगहमें
इ प ओ जानने चाहिये कैसें कि
ग्र ल ग्रे यह राशिमें नही क
हैहै ॥

अथगंड नक्षत्रम्

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| श्लेषा | ज्येष्ठा | रेवती | अन्त्यपाद गंड | होताहै |
| मघा | मूल | अश्वि | प्रथम पाद गंड | होताहै |